ISBN: 978-93-5679-270-8

आनंद ‘अभय’ के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता



डॉ० राजीव अग्रवाल
आनन्द कुमार प्रजापति
शिवम् श्रीवास

आनंद ‘अभय’ के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज. अतर्रा (बाँदा)

आनन्द कुमार प्रजापति

एम०ए० (अंग्रेजी). एम०एड०

शिवम् श्रीवास

बी०एड०. एम०एस-सी० (गणित)

आनंद ‘अभय’ के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ० राजीव अग्रवाल
आनन्द कुमार प्रजापति
शिवम् श्रीवास

E-book संस्करण: 2026

मूल्य: ₹99

ISBN: 978-93-5679-270-8

प्रकाशक:

शिवम् श्रीवास

गोकुलपुरी. शंकर बाजार. कर्वी, जिला– चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) 210205

Mob– 7054396373

E–mail: shivamshrivash123@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लाँघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ–न–कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार–प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, "आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता"। इस पुस्तक को अग्रांकित पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है–

- प्रथम अध्याय में अध्ययन परिचय के अंतर्गत शिक्षाः विकास की प्रक्रिया, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, समस्या का प्रदुर्भाव, समस्या कथन, अध्ययन उद्देश्य, अध्ययन का परिसीमांकन, अध्ययन विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

- द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के अन्तर्गत शिक्षा में अभिनव प्रयोग से संबंधित शोध अध्ययन में कतिपय समीक्षा की गई है।

- तृतीय अध्याय में 'आनंद 'अभय' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन किया गया है जिसके अंतर्गत आनंद 'अभय' जी का जीवन परिचय, वंश परंपरा, अध्ययन यात्रा, गृहस्थ जीवन, अध्यापन यात्रा, राज्य एवं स्थान विशेष की यात्राएँ, सामाजिक कार्य, उपलब्धियाँ शैक्षिक चिंतन एवं सुझाव पर प्रकाश डाला गया है।

- चतुर्थ अध्याय में आनंद 'अभय' की साहित्यिक सर्जना का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें आनंद 'अभय' जी की चयनित रचनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

- पंचम अध्याय में शोध अध्ययन से संबंधित निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किए गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांकः 31/01/2026
स्थानः अतर्रा (बाँदा)

डॉ० राजीव अग्रवाल
आनन्द कुमार प्रजापति
शिवम् श्रीवास

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	अध्ययन परिचय	1—12
1.1	शिक्षाः विकास की प्रक्रिया	1
	1.1.1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ	2
1.2	समस्या का प्रादुर्भाव	8
1.3.	समस्या कथन	10
1.4	अध्ययन के उद्देश्य	10
1.5	अध्ययन का सीमांकन	11
1.6	शोध विधि	11
	1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन विधि	11
	1.6.2 केस अध्ययन विधि	12
1.7	अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता	12
द्वितीय अध्याय	संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण	13—22
2.1	प्रस्तावना	13
2.2	काव्य से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन	14
2.3	समीक्षात्मक निष्कर्ष	22
तृतीय अध्याय	व्यक्तित्व एवं कृतित्व	23—29
3.1	जीवन परिचय	23
3.2	आनंद 'अभय' जी की वंश परम्परा	24
3.3	अध्ययन यात्रा	24
3.4	गृहस्थ जीवन	26
3.5	अध्यापन यात्रा	26
3.6	आनंद 'अभय' जी की यात्राएँ	27
3.7	व्यक्तित्व की विशेषताएँ	28
3.8	साहित्यिक एवं काव्यगत विशेषताएँ	28

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
चतुर्थ अध्याय	साहित्य सर्जना, निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता	36–68
4.1	प्रकाशित लेख	30
	4.1.1 आलोचनाः सच्चा आलोचक	30
4.2	अप्रकाशित खण्डकाव्य	31
	4.2.1 एकलव्य का न्याय	31
4.3	आनंद दोहावली	32
4.4	लघु गीतमाला	35
4.5	अप्रकाशित कविताएँ	39–67
	4.5.1 बरगद का वृक्ष	39
	4.5.2 रूकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं	44
	4.5.3 गौरैया	47
	4.5.4 आज का किसान	50
	4.5.5 जनपद जालौन के नदी संगम	55
	4.5.6 बंद हो रहे विद्यालय	58
	4.5.7 नवयुग के राही	61
	4.5.8 मंजिल के राही	63
	4.5.9 हुंकार	65
4.6	अप्रकाशित बाल कविताएँ	67–68
	4.6.1 बरखा रानी	67
	4.6.2 चिड़िया रानी	68
पंचम अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव	69–73
5.1	निष्कर्ष	69
5.2	शैक्षिक निहितार्थ	70
5.3	शैक्षिक उपादेयता	72
5.4	भावी शोध हेतु सुझाव	73
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	74
	परिशिष्ट	75
	(अ) आनंद 'अभय' भ्रमण चित्रावली	76
	(ब) जीवनवृत्त	77

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षाः विकास की प्रक्रिया

1.1.1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.5 अध्ययन का सीमांकन

1.6 शोध विधि

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन विधि

1.6.2 केस अध्ययन विधि

1.7 अध्ययनका महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षाः विकास की प्रक्रिया

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारंभ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। लगभग 5 वर्ष की आयु पर बालक को विद्यालय भेजना प्रारंभ किया जाता है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन पर्यंत चलता रहता है। अपने वास्तविक अर्थ में समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' का अर्थ है सीखना और सिखाना, इसलिए 'शिक्षा' का अर्थ हुआ सीखने–सिखाने की क्रिया। यदि हम शिक्षा के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द एजूकेशन (Education) पर विचार करें तो भी उसका यही अर्थ निकलता है। एजूकेशन शब्द लैटिन भाषा के एजूकेटम (Educatum) शब्द से बना है और एजूकेटम उसी भाषा के ए (E) तथा ड्यूको (Duco) दो शब्दों से मिलकर बना है जिनका क्रमशः अर्थ अन्दर से तथा आगे बढ़ाना है, इसलिए एजूकेशन का अर्थ हुआ बच्चे की आंतरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखें तो यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है– व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण–प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन–प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना–सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना–सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आता है। जे०एस० मैकेन्जी (J.S.Mackenzie) के अनुसार व्यापकदृष्टि से शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव के द्वारा इसका विकास होता है।

संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से तथा औपचारिक रूप से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है। इस शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ, सभी निश्चित होते हैं। यह शिक्षा बच्चे की एक निश्चित आयु पर प्रारंभ होती है और एक निश्चित काल तक होती है। जे०एस० मैकेन्जी (J.S.Mackenzie) के अनुसार संकुचित दृष्टि से शिक्षा का अर्थ अपनी शक्तियों का विकास और सुधार के लिए किए गए किन्हीं भी चेतना पूर्ण प्रयासों से लिया जा सकता है।

मनुष्य का जन्मजात व्यवहार पशुवत् होता है। शिक्षा के द्वारा उसके इस व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है अधिक विस्तृत दृष्टिकोण से देखें तो मनुष्य अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से सुरक्षित रखता है और उनको आने वाली पीढ़ी के हाथों सौंप देता है। आने वाली पीढ़ी इस ज्ञान के आधार पर और आगे बढ़ती है और इसमें अपने अनुभव तथा विचार जोड़ देती है। इस प्रकार किसी समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता है। प्लीज टॉक शिक्षा के अभाव में यह सब संभव नहीं है। स्पष्ट है कि शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपनी जाति के प्राणियों के बीच रहकर अनुकरण द्वारा उसके अनुसार चलना–फिरना, खाना–पीना और बोलना आदि सीखना है। पशु–पक्षी जन्म के कुछ दिन पश्चात ही अपनी जाति के प्राणियों की भांति उनकी समस्त क्रियाएं सीख लेते हैं, परंतु उनकी सीखने सिखाने की यह प्रक्रिया केवल परिस्थितियों के साथ समायोजन कर आत्मरक्षा के कार्यों तक सीमित रहती है जबकि मनुष्य की शिक्षा उस केवल परिस्थितियों के साथ समायोजन करना ही नहीं सिखाती बल्कि उसमें अपने अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करने की क्षमता का विकास भी करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के रहन–सहन, खान–पान एवं विचारों और जीवन को सुख में बनाने के लिए साधन तथा उपसाधनों के निर्माण में सदैव परिवर्तन होता रहता है इस परिवर्तन का दूसरा नाम विकास है।

1.1.1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

●शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया, अपितु उनकी सलाह पर कार्य भी किया, परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके संबंध में कोठारी आयोग, 1964 ने कहा है– बार–बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखिरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसाय में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ–साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनायें।

●शिक्षा का राजनीतिकरण

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। हमारी मनोवृत्ति का निर्माण हमारे जीवन, आचरण एवं परिवेश के अनुरूप ही होता है। हमारे जीवन तथा कार्यशैली का मूल आधार हमारी शिक्षा है। किसी भी राष्ट्र का विकास उस देश की शिक्षा पद्धति पर निर्भर होता है। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझने और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। देश की उन्नति के लिए हर व्यक्ति जिम्मेदार है और इस जिम्मेदारी का विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। राजनीतिशात्रियों का विचार केन्द्र, राज्य और उसका शासनतन्त्र होता है। ये व्यक्ति और समाज, दोनों को राज्य और उसके शासनतंत्र के सन्दर्भ एवं परिप्रेक्ष्य में देखते–समझते हैं। शिक्षा को ये राष्ट्र के निर्माण का साधन मानते हैं। राष्ट्र का निर्माण होता है– श्रेष्ठ नागरिकों से और श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होता है– शिक्षा से। इनकी दृष्टि से–वास्तविक शिक्षा वह है जो श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है।

भारतीय शिक्षा का राजनीतिक एजेंडों के साथ जुड़ने का एक लंबा इतिहास रहा है। हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति तीव्र हो गई है, जिसका प्रभाव शैक्षणिक जीवन एवं संस्थागत अखंडता के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है। राजनेता अपने कॅरियर को बेहतर बनाने के लिए समय–समय पर कॉलेजों की स्थापना करते रहे हैं। सरकारों ने शैक्षणिक संस्थानों को राजनीतिक रूप से लाभप्रद स्थानों पर स्थापित करने, शिक्षण संस्थाओं का नामकरण और पुनर्नामकरण करने तथा नियुक्तियाँ और पदोन्नतियाँ करने में राजनीतिक हस्तक्षेप से शैक्षणिक स्वतंत्रता प्रभावित हुई है।

शिक्षा के राजनीतिकरण से शैक्षणिक स्वतंत्रता में कमी, विचारों की विविधता में कमी, छात्र सक्रियता का राजनीति से प्रभावित होना, शोध वित्तपोषण में कमी, रोजगार में कमी तथा आदर्श नागरिकों के निर्माण की समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया जाए, इस विषय पर सत्ताधारी दल अपना एजेंडा कोर्स में लागू करने लगता है। परिणामस्वरूप, पाठ्यक्रम में अनावश्यक और अवैज्ञानिक विषयों को भर दिया जाता है। आज के समय में शिक्षा का स्तर तथा विकास राजनीति के घेरे में है। ऐसे में शिक्षा का स्तर कैसे सुधारा जाए, यह विचारणीय है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ऐसी खामियाँ हैं, जिनके चलते शिक्षण संस्थाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। इनका सबसे बड़ा कारण शिक्षा का राजनीतिकरण है।

●शिक्षा व्यवस्था के क्षरण में पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं बल्कि अभिभावक एवं शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने–अपने विचार दिए पुरातन गुरु–शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरू का सम्मान करते थे, शिक्षा पाते थे परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली का क्षरण होना है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी बच्चों को शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर क्यों है? इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक तथा शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरु–शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिकों को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक–छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं है अपितु बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है कि बहुत से स्थानों पर शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु–शिष्य संबंध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं, जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। अब समय आ गया है कि अभिभावक, गुरू एवं छात्र चिन्तन करें। दूसरी बात पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुनः प्रतिस्थापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ेगी। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेरों कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है और न ही योग्य शिक्षक; जिस

कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया, जो अब चरम पर है। इस समानांतर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

●शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई है तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से अधिकांश सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों मे आधारभूत ढाँचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पाँकच–पाँच कक्षाएँ संभाल रहा है। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली–गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। बहुत से प्राइवेट विद्यालयों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ विगत कुछ वर्षों से अध्यापक ही नहीं हैं या अध्यापकों की बहुत कमी है। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के सम्पन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापकों की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि स्कूलों में अध्यापकों की भी नहीं नियुक्त कर सकती। गाँव के स्कूल में एक अध्यापिका है तथा वह तीन साल में स्कूल गई है। यहाँ बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एन०आर०आई० ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिकाओं की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित ही होगा। संविधान के 86 वें संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा अनुच्छेद 21(क) जोड़ा गया था जो यह प्रावधान करता है कि राज्य विधि बनाकर 6 से 4 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा। केन्द्र सरकार ने इस अधिकार को व्यावहारिक रूप देने के लिए संसद में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित किया था जो 1 अप्रैल 2010 से लागू हुआ। इसका उद्देश्य यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती, यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए तथा विद्यालयों में मानकानुसार शिक्षकों की तैनाती भी होनी चाहिए, क्योंकि शिक्षा की उपेक्षा करना देश के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

●उत्तरप्रदेश में प्राथमिक विद्यालय बंद

यदि किसी प्राथमिक विद्यालय में छात्र–छात्राओं की संख्या 50 से कम है तो ऐसे विद्यालयों को बन्द करने का आदेश उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिया गया है। विद्यालयों में कम छात्र संख्या होना दर्शाता है, कि व्यावस्था में कहीं न कहीं दोष अवश्य है जिससे समाज में सरकारी विद्यालयों में अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने पर बल नहीं दिया जाता है भले ही अच्छे शिक्षक ही क्यों उपलब्ध न हों। दूसरा अध्यापकों का केवल वेतन भोगी रवैया, अभिभावकों का निष्क्रिय रहना, साथ ही सरकारों का कागजी योजनाओं में सीमित रह जाना। इन कारणों की वजह से विद्यालयों को मर्ज करने की नौबत आ गई है।

●भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धान्तों का एक मात्र उद्देश्य है– मनुष्य का कल्याण करना। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्व है। संस्कार सम्पन सन्तान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता–पिता का कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चों को नैतिक बनाएं और कुसंस्कारों से बचाकर बचपन से ही उनमे आदर्श और संस्कारों का ही बीजारोपण करें। लेकिन आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब लुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आखिर क्यों आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है? समाज में सात्विक प्रवृत्ति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है। वहीं हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं है तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारो की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में बदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन–सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

●योग्य शिक्षकों का अभाव

भारतीय शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि शिक्षण व्यवसाय को चुनने वाले उम्मीदवार शिक्षण के अतिरिक्त किन्हीं दूसरे क्षेत्रों की नौकरियों को प्राथमिकता देते हैं तथा शिक्षण को अंतिम विकल्प के रूप में उपयोग करते हैं जो बेहद चिंताजनक है। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें सारा जोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्(३६६) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिजाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है। इस प्रकार के प्रशिक्षणों का परिणाम बेहद सीमित एवं अप्रभावशाली होता है। ऐसे में शिक्षकों की कार्यशीलता एवं व्यावसायिक नैतिकता प्रभावित होना स्वाभाविक है। कौशल, मानसिकता, व्यावसायिक नैतिकता एवं प्रभावशीलता में कमियों की एक लम्बी श्रृंखला है। लगभग आधे शिक्षकों का यह मानना है कि वर्तमान में उन्हें दिया जाने वाला प्रशिक्षण उनके शिक्षण व्यवसाय के लिए पर्याप्त नहीं है।

●मूल्यहीन शिक्षाः एक गंभीर चुनौती

"शिक्षा वह शक्तिशाली हथियार है जिससे हम दुनिया को बदल सकते हैं" यह कथन नेल्सन मंडेला का है, जो शिक्षा के महत्व को दर्शाता है, लेकिन जब यही शिक्षा केवल डिग्रियों, नौकरी और प्रतिस्पर्धा तक सीमित हो जाए, तो वह अपने उद्देश्य से भटक जाती है। आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ शिक्षा की भौतिक उपलब्धियाँ तो बहुत हैं, परंतु उसमें

नैतिकता, करुणा, ईमानदारी और मानवता जैसे मूल्य विलुप्त हो गए हैं। यही स्थिति मूल्यहीन शिक्षा की भी है। यह न केवल व्यक्तियों को खोखला बना रही है, बल्कि समाज और देश के लिए भी खतरे का संकेत है।

मूल्यहीन शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा की जाती है। ऐसी शिक्षा में विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त तो करते हैं, परंतु जीवन के उच्च आदर्शों, व्यवहारिक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जिम्मेदारियों से अनभिज्ञ रहते हैं। यह शिक्षा केवल परीक्षा पास करने, नौकरी पाने और भौतिक सुखों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, न कि एक अच्छा इंसान बनने के लिए।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यहीनता के संकेत

- अंकों की दौड़ःआज शिक्षा का मूल उद्देश्य 'कितने अंक मिले?' और 'कौन सी नौकरी मिली?' बन गया है। विद्यार्थी ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि अंक प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं।

- रटंत पद्धतिःज्ञान का आंतरिक विकास तब होता है जब शिक्षा सोचने, समझने और सवाल पूछने की स्वतंत्रता दे। लेकिन आज बच्चों को रटने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे उनकी कल्पनाशक्ति और आलोचनात्मक सोच कुंद हो जाती है।

- नैतिक शिक्षा की उपेक्षाःअधिकांश स्कूलों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा को गंभीरता से नहीं लिया जाता। व्यवहार, सहानुभूति, सहयोग, और सच्चाई जैसे विषयों की कोई ठोस शिक्षा नहीं दी जाती।

- शिक्षक–विद्यार्थी संबंध में गिरावटःपूर्वकाल में गुरु और शिष्य का संबंध आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा पर आधारित होता था। आज वह रिश्ता केवल पढ़ाने और परीक्षा दिलाने तक सीमित हो गया है।

- शिक्षा का व्यवसायीकरणःआज शिक्षा संस्थान लाभ का माध्यम बन चुके हैं। महंगी फीस लेकर सुविधाएं तो दी जाती हैं, पर मूल्य आधारित शिक्षा नहीं दी जाती।

मूल्यहीन शिक्षा के दुष्परिणाम

- नैतिक पतनःजब शिक्षा से नैतिकता हट जाती है, तो व्यक्ति निजी और सार्वजनिक जीवन में गलत रास्तों को अपनाता है– जैसे भ्रष्टाचार, छल–कपट, अपराध, धोखा, और नैतिक अपराध।

- समाज में असंवेदनशीलताःमूल्यहीन शिक्षा ऐसे व्यक्तियों को जन्म देती है जो समाज की पीड़ा को समझने और समाधान ढूंढ़ने में असमर्थ होते हैं।

- मानसिक तनाव और अवसादःबच्चों पर अंकों और करियर का इतना दबाव डाला जाता है कि वे मानसिक तनाव और डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या इसका प्रमाण है।

- बेरोजगारी और असंतोष:शिक्षा प्रणाली कौशल आधारित नहीं होने के कारण पढ़े–लिखे युवा बेरोजगार रह जाते हैं। इससे उनमें असंतोष, हताशा और विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है।

- राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास:जब शिक्षा केवल आत्मकेन्द्रित और भोगवादी नागरिक उत्पन्न करती है, तो राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक धरोहर खतरे में पड़ जाती है।

भारत में मूल्यहीन शिक्षा का प्रसार

भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना के साथ समाज को दिशा देना भी था। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों को वेद, धर्म, युद्धकला, नीति, धर्म, सेवा और आत्मसंयम सिखाया जाता था। परंतु आज की शिक्षा पश्चिमी शैली पर आधारित है, जिसमें विज्ञान और तकनीक पर तो जोर है, परंतु जीवन मूल्य और संस्कृति की उपेक्षा है।

विश्वस्तर पर मूल्यहीन शिक्षा की स्थिति

अमेरिका, जापान, यूरोप सहित कई विकसित देशों में भी शिक्षा प्रणाली में मानवीय मूल्यों की कमी देखी जा रही है। वहाँ के विद्यार्थी अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और सफलता के दबाव में रहते हैं, जिससे आत्महत्या की घटनाएँ, स्कूल शूटिंग्स और सामाजिक विकृति बढ़ रही हैं। शिक्षा में मूल्य अगर शामिल नहीं होंगे, तो केवल प्रगति ही नहीं, पतन भी होगा।

समाधान के उपाय

- नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना:प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।

- गुरु–शिष्य परंपरा का पुनर्जागरण:शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरणा स्रोत और आदर्श बनाना होगा।

- व्यावसायिकता को सीमित करना:शिक्षण संस्थानों को लाभ कमाने का साधन न बनाकर सेवा का केंद्र बनाना होगा।

- समग्र शिक्षा मॉडल अपनाना:शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और भावनात्मक विकास को समान महत्व देना चाहिए।

- सामाजिक जागरूकता बढ़ाना:माता–पिता, मीडिया और समाज को मिलकर यह समझाना होगा कि अंकों से अधिक जरूरी है, एक अच्छा इंसान बनना।

● मूल्यपरक साहित्य का प्रोत्साहनःअभिभावकों, शिक्षकों तथा सरकार की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के पास शिवाजी, महाराणा प्रताप, महारानी लक्ष्मीबाई जैसे वीर, वीरांगनाओं, विद्वानों एवं विदुषियों का जीवन दर्शन उपलब्ध हो सके।

आधुनिक उदाहरण

भारत में कुछ संस्थान जैसे– गाँधी विद्या मंदिर, शांति निकेतन, रामकृष्ण मिशन स्कूल्स आदि मूल्य आधारित शिक्षा देने की दिशा में काम कर रहे हैं। ऐसे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

मूल्यहीन शिक्षा एक ऐसी समस्या है जो धीरे–धीरे हमारे समाज की जड़ें खोखली कर रही है। यह शिक्षा हमें डिग्रियाँ तो देती है, पर जीवन जीने की कला नहीं। हमें यह समझना होगा कि यदि शिक्षा में मानवीय मूल्य नहीं होंगे, तो वह केवल यंत्रवत इंसान तैयार करेगी, न कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक। इसलिए आज सबसे बड़ी जरूरत है। शिक्षा को फिर से मूल्य–आधारित बनाना। जब तक शिक्षा में सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा और करुणा जैसे मूल्य नहीं होंगे, तब तक समाज का कल्याण संभव नहीं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

वर्तमान समय में आजादी के बाद से ही मैकाले की शिक्षा नीति का निरंतर पठन–पाठन में बने रहने से शिक्षा के नैतिक मूल्यों में कमी बनी रही है। इन सबका कारण पुरातन भारतीय मनीषियों, विद्वानों, साहित्यकारों एवं भारतीय नायक एवं नायिकाओं का उचित चयन न किया जाना रहा है।

मैकाले की शिक्षा पद्धति जहां एक ओर आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण के कारण स्वार्थोन्मुखी होती रही है वही दूसरी ओर गुरुकुल आधारित मूल्यपरक शिक्षा विलुप्त होती रही है। इसके समाधान के रूप में हमें अतीत के नायक नायिकाओं को शिक्षण में शामिल कर उन्हें उचित स्थान दिलाकर शिक्षण स्तर को वैभवशाली बनाकर सुधारना होगा।

वर्तमान काव्य प्रेरणादायक क्यों नहीं है? यह प्रश्न आज के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका उत्तर कई सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक बदलावों में निहित है। नीचे इसकी प्रमुख कारणों का विश्लेषण किया गया है–

●आदर्शवाद का अभावः–पुराने समय का काव्य तुलसीदास, कबीर, मीरा, निराला, महादेवी आदि के द्वारा लिखा गया था, जिसमें जीवन मूल्यों, ईश्वर भक्ति, आत्मा की शुद्धता, और सामाजिक उत्थान के आदर्श थे। आज के कवियों में वह आदर्शवादी दृष्टिकोण बहुत कम दिखाई देता है। जब साहित्य में आदर्श नहीं होगा तो प्रेरणा की शक्ति भी कम हो जाएगी।

●<u>स्वार्थ और व्यक्तिगत अनुभवों की प्रधानताः</u>—आज का अधिकांश काव्य "मैं" और "मेरे" के इर्द—गिर्द घूमता है। व्यक्तिगत दुख, अकेलापन, असफल प्रेम, आंतरिक द्वंद्व जैसे विषय अधिक हो गए हैं, जो जनमानस के लिए प्रेरणास्पद नहीं बन पाते। समाज के सामूहिक कल्याण या उद्दीपन की भावना कम हो गई है।

●<u>समाज की निराशाजनक स्थिति का प्रभावः</u>—कविता समाज का दर्पण होती है। जब समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, बेरोजगारी और मूल्यहीनता व्याप्त हो, तो साहित्य भी उसी का प्रतिबिंब बनता है। ऐसे में कविता भी कुंठा, अवसाद और निराशा से भर जाती है, जिससे उसमें प्रेरणादायक तत्व कम हो जाते हैं।

●<u>कला की जटिलता और बौद्धिकताः</u>—वर्तमान कविता में भाषा और प्रतीकों की जटिलता बहुत बढ़ गई है। आम पाठक उस भाव को समझ ही नहीं पाता, जो कवि कहना चाहता है। जब कविता का अर्थ समझने में कठिनाई हो, तो वह प्रेरणा नहीं दे सकती।

●<u>मंचीय कविता का अधोपतनः</u>—आज मंचीय कवियों का उद्देश्य मनोरंजन बन गया है। हास्य—व्यंग्य, चुटकुले, तालियाँ बटोरने वाले संवाद यह सब कविता की आत्मा को क्षति पहुँचाते हैं। जब कविता केवल मनोरंजन बन जाए, तो वह समाज को जागृत करनेका कार्य नहीं कर सकती।

●<u>संस्कृति और मूल्यों से दूर होता काव्यः</u>—वर्तमान काव्य में भारतीय संस्कृति, परंपरा, धर्म और नैतिकता का स्थान बहुत कम होता जा रहा है। पश्चिमी विचारों का अत्यधिक प्रभाव भी कविता को प्रेरणाहीन बना रहा है, क्योंकि भारतीय समाज की जड़ों से कटकर रचनात्मक ऊर्जा क्षीण हो जाती है।

●<u>राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना की कमीः</u>—प्रेरणादायक कविता वह होती है जो देश, समाज, और मानवता के लिए कुछ कहे। आज की कविता में राष्ट्रप्रेम या जनचेतना के स्वर कम सुनाई देते हैं। जब कविता स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज को दिशा नहीं देती, तब वह प्रेरणादायक कैसे हो सकती है?

●<u>नवोन्मेष की कमी और दोहरावः</u>—कई बार वर्तमान कवि पुराने विचारों को ही नए शब्दों में दोहराते हैं। नवीन दृष्टिकोण और सृजनात्मकता का अभाव भी पाठक को प्रभावित नहीं कर पाता।

किसी राष्ट्र के निर्माण के लिए परम्पराओं, प्रथाओं तथा आवश्यकता होती है ठीक उसी इनका वहन करने एवं पालन करने वाले नागरिकों की भी आवश्यकता होती है। इन्हीं नागरिकों में लेखकों एवं कवियों की भी समाज की सोई हुई आत्मा को जगाने एवं झकझोरने हेतु कलम एवं काव्य की आवश्यकताएँ समय—समय पर बनी रही। विभिन्न कालखंडों में विभिन्न कवियों ने काव्य की आत्मा को नवीन सामाजिक मंथन के माध्यम से अलग—अलग समसामयिक दर्शन प्रदान किया है।

इन्हीं साहित्यकारों के मध्य आनंद 'अभय' एक ऐसे पात्र हैं, जिनकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम, संस्कृति का वैभव, राजनैतिक स्थितियों पर कटाक्ष, समाजिक कुरीतियों, हास्य विनोद एवं पतन से परिवर्तन की ओर एक मार्ग दर्शन है।

कतिपय लेखकों एवं कवियों का प्रकाश में आ पाना भी एक चुनौती का विषय रहा। कुछ प्रतिभाएँ सामाजिक विषमताओं तथा चरण–साधना के प्रयास में कमी करने के कारण समाज के प्रकाश्य में दृश्यमान होने हेतु सक्षम नहीं हो पातीं। आनंद 'अभय' भी गुमनामी में खोए हुए ऐसे कवि हैं जिनकी प्रतिभा को समाज के सामने लाना आवश्यक है जिससे समाज का सही अर्थों में भला हो सके।

राष्ट्र के मूल्यों, परम वैभव को प्राप्त करने की अतीत से लेकर वर्तमान तक की आकांक्षा, विस्मृत हुए उच्च कोटि के शैक्षिक प्रयास तथा गुमनाम नायक नायिकाओं के चरित्रों को जन साधारण तक पहुंचने का भगीरथ प्रयास के साथ–साथ राष्ट्र–प्रेम एवं समृद्ध संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु आनंद 'अभय' जैसे कवियों एवं लेखकों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

वर्तमान कविता पूरी तरह प्रेरणाहीन नहीं है, लेकिन वह व्यापक स्तर पर जन–मानस को झकझोरने और दिशा देने में असमर्थ हो रही है। इसका मुख्य कारण है। आदर्शों, सामाजिक उत्तरदायित्व और सरल संप्रेषण का अभाव। यदि कविता पुनः लोकचेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और सृजनात्मक नवाचार की ओर लौटे, तो वह फिर से प्रेरणास्रोत बन सकती है।

अतः उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखकर ही मैंने आनंद 'अभय' को पाया, जिनके शैक्षिक योगदान का अध्ययन एवं अनुकरण निश्चित रूप से शैक्षिक जगत के उन्नयन में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया–

''आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता''।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल, सुव्यवस्थित एवं सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- आनंद 'अभय' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- आनंद 'अभय' जी के शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेश का अध्ययन करना।
- आनंद 'अभय' जी की साहित्य सर्जना में शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।

- आनंद 'अभय' जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों में सन्निहित उन आधारभूत तत्वों काअध्ययन करना, जो स्वस्थ शैक्षिक समाज के निर्माण में सहायक हैं।
- अध्ययन की वर्तमान प्रासंगिकता चिह्नित करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.5 अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत लघु प्रबन्ध आनंद 'अभय' जी के व्यक्त्वि, कृतित्व, सामाजिक जीवन एवं शैक्षिक विचारों के अध्ययन तक सीमित है।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसंधान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारू रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है। जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध के अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन विधि

मात्रात्मक अनुसंधान की सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रयुक्त विधि वर्णनात्मक अनुसंधान है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से वर्तमान घटनाक्रमों तथा परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए होता है। जॉन डब्ल्यू० बेस्ट तथा जेम्स वी० काहन (John W. Best and James V. Kahn) के अनुसार कोई वर्णनात्मक अध्ययन क्या है, का वर्णन तथा विवेचन करता है। यह दशाओं व संबंधों जो विद्यमान हैं, राय जो रखीं गई हैं, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, प्रभाव जो प्रत्यक्ष हैं, अथवा प्रवृत्तियाँ जो विकसित हो रहीं हैं से संबंधित होता है। यद्यपि यह कभी–कभी अतीत की उन घटनाओं व प्रभावों पर भी विचार करता है जो वर्तमान परिस्थितियों से जुड़े हैं, मुख्यतः इसका सम्बन्ध वर्तमान से होता है। वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है– वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय के ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता समस्या से संबंधित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है बल्कि वह समस्या से संबंधित विभिन्न चरों में आपसी संबंध ढूँढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान किसी समस्यात्मक परिस्थिति में अनुसंधान समस्या की पहचान व परिभाषीकरण से प्रारम्भ होता है। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण तथा परिकल्पना निर्माण से इसे

एक स्पष्ट दिशा मिलती है तथा तत्पश्चात अनुसंधान अभिकल्प का निर्धारण किया जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान आगमन–निगमन तर्क की वैज्ञानिक तर्क विधियों का प्रयोग करता है एवं इसके तरीके वांछित सूचनाओं को यथार्थ ढंग से समग्रता से उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं। निःसंदेह ज्ञान–सृजन की दृष्टि से वर्णनात्मक अनुसंधानों की महत्ता को कम करके नहीं आँका जा सकता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के संबंध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएँ, अतीत की घटनाओं तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती हैं तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। प्रदत्त संकलन के लिए साक्षात्कार, प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, अनुसूची, प्रपत्र, अवलोकन इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। यह व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएँ जानने की समुचित विधि है। इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता–पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं सम्बन्धित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।

केस अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान का वह प्रकार है जिसके अन्तर्गत इकाई विशेष के सन्दर्भ में गहन एवं व्यापक अध्ययन किया जाता है। अध्ययन की इस विधि में इकाई विशेष को लम्बी समयावधि तक निरन्तर निरीक्षण में रखा जाता है और उससे सम्बन्धित सूचनाएँ विभिनन स्रोतों से प्राप्त करते हुए निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसके अन्तर्गत अध्ययन की इकाई सामान्य न होकर विशिष्ट होती है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में आनंद 'अभय' के साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है। वे हिन्दी एवं अंग्रेजी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ–साथ एक लेखक एवं कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा अपनी लेखनी से जनसामान्य को लाभान्वित कर रहे हैं। निश्चय ही यह लघु शोध विशेष कर हिन्दी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी है तथा जीवन में आलोचना के द्वारा सही सूचनाओं का चुनाव करने हेतु सक्षम बनाने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान में अपना योगदान दे सकेंगें।

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 काव्य से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

2.3. समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान एक ऐसी बौद्धिक तथा सृजनात्मक प्रक्रिया है जो मानव जाति के द्वारा पूर्व में अर्जित ज्ञान तथा अनुभवों पर आधारित होती है। यही कारण है कि मानव जाति द्वारा भूतकाल में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप संकलित ज्ञान भण्डार का लाभ अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान कार्य में मिलता है। वस्तुतः किसी भी प्रस्तावित अध्ययन को पूर्व के अध्ययनों व अनुभवों से जोड़े बिना वर्तमान में कोई भी अनुसंधान कार्य करना सम्भव नहीं होता है। अनुसंधानकर्ता के लिए सन्दर्भ सामग्री की खोज व अध्ययन एक समय साध्य कार्य होने के बावजूद अत्यन्त लाभदायक होता है। पूर्व ज्ञान व अनुभवों के आधार पर ही अनुसंधान की योजना का निर्माण तथा क्रियान्वयन सम्भव हो पाता है। इसके लिए अनुसंधानकर्ता अपनी समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध विभिन प्रकार के साहित्यों का सम्यक ढंग से अध्ययन–मनन करता है। अनुसंधान क्षेत्र से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अन्धेरे में तीर चलाने के सामान हो जाता है। साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? को उस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक (Significant), मौलिक (Original) तथा अद्वितीय (Unique) बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है।

निःसन्देह किसी भी नियोजित अनुसंधान कार्य का सबसे पहला तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करके किए जा रहे अनुसंधान कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पृष्ठभूमि तैयार करना है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं,विश्व–कोषों, प्रकाशित व अप्रकाशित अनुसंधान प्रबन्धों, पत्रकों व विचार–विमर्शों, शब्दकोषों, अभिलेखों तथा अन्य सूचना स्रोतों पर उपलब्ध विविध प्रकार की सामग्री से होता है। इनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी अनुसंधान समस्या के चयन, अनुसंधान परिकल्पना के निरूपण, अनुसंधान प्रारूप के विकास, कार्य विधियों के क्रियान्वयन एवं प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए जॉन० डब्ल्यू० बेस्ट (John W. Best) ने कहा है कि 'व्यावहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों, जिन्हें प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारम्भ करना पड़ता है, से भिन्न मानव पूर्व में संगृहीत व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को सम्भव बनाते हैं।' अस्तु किसी भी अनुसंधान के लिए अपनी समस्या से सम्बन्धित अद्यतन साहित्य का सम्यक अध्ययन–मनन करना अनिवार्य होता है। सूचना के स्रोतों को दो भागों– प्राथमिक स्रोत तथा द्वितीयक स्रोत में विभाजित किया जा सकता है। प्राथमिक स्रोतों के अन्तर्गत पूर्व अनुसंधानकर्ताओं एवं अध्ययनकर्ताओं के द्वारा स्वयं प्रस्तुत सामग्री होती है। ऐसे स्रोत न केवल विस्तृत सूचना प्रदान करते हैं वरन् अधिक प्रमाणिक सूचनाएँ भी देते हैं। द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत किए जा चुके अनुसंधान कार्यो को दूसरे व्यक्तियों द्वारा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने वाली सामग्री आती है। ऐसे स्रोत यद्यपि संक्षिप्त सूचना प्रदान करते हैं परन्तु यह सूचना अपेक्षाकृत कुछ कम विश्वसनीय तथा प्रमाणिक होती है। मुख्य स्रोत के अधिक विश्वसनीय होने के कारण उसका उपयोग अधिक वांछनीय

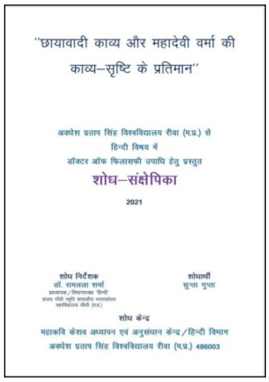
होता है परन्तु मुख्य स्रोतों का चयन करने के लिए द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन भी आवश्यक होता है।

2.2 काव्य से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

1. सुन्ता गुप्ता (2021) ने ''छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा के काव्य सृष्टि के प्रतिमान'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि –

- महादेवी जी का काव्य केवल काव्य के रूप में ही नहीं बल्कि सत्य के बोध, दर्शन की अभिव्यक्ति, भावना के औदात्य जीवन के सौन्दर्य एवं विश्व के कल्याण की दृष्टि से भी महान है।
- महादेवी के काव्य का निरूपण भारतीय चिन्तकों द्वारा मान्य है जिसका अनुसंधान शताब्दियों पूर्व उपनिषदों के रचयिताओं ने किया था, जिसका उद्घोष शंकराचार्य से लेकर विवेकानंद तक विभिन्न महर्षियों की पुनीत वाणी द्वारा होता रहा है।


''छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा की काव्य–सृष्टि के प्रतिमान''

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.) से
हिन्दी विषय में
डॉक्टर ऑफ फिलासफी उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–संक्षेपिका
2021

शोध निर्देशक
डॉ. रामलला शर्मा

शोधार्थी
सुन्ता गुप्ता

शोध केन्द्र
महाकवि केशव अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र/हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.) 486003

- महादेवी का काव्य आज भी आस्तिक और आस्थावान चिन्तकों के द्वारा बहुमान्य है। उनका काव्य महात्मा बुद्ध के संदेश से अनुप्राणित है, पर वह जीवन के पलायन करने या संन्यास को स्वीकारने की प्रेरणा नहीं देता अपितु बाधाओं, विपत्तियों और संकटो से जूझने की शक्ति एवं दुःख को सहन करने का बल प्रदान करता है।
- महादेवी के काव्य में हमें जीवन की चंचल वासनाओं, क्षुद्र भावनाओं एवं संकीर्ण रुढ़ियों से ऊपर उठाकर मानवता के व्यापक आदर्श एवं उदान्त लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है, जिससे सभी प्राणियों में मानवता, विश्वबंधुत्व की भावना, संवेदनशीलता, उदारता एवं करुणा का अंकुरण हो सके।

2. रणजीत यादव(2015) ने ''पद्माकर के काव्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन"

नामकशीर्षक पर शोध कार्य किया और यह पाया कि–

- पद्माकर की कविता अपने समय, समाज और समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों की लोकधर्मी अभिव्यक्ति है।
- इसमें भारतीय सभ्यता, संस्कृति, और लोकजीवन के विविध अतरंगी छवि अपने रूप, रंग, रस और कलात्मकता के विविध आयामों को दर्शाती है।
- पद्माकर रीतिकविता के समर्थ कवि थे। ब्राह्मण होने के कारण विद्या और लोक संस्कार इन्हें इनके पिता से प्राप्त हुए थे। ये सिर्फ कवि ही नहीं, मंत्रगुरु भी थे।


पद्माकर के काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(दिल्ली विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध)

शोध-निर्देशिका
डॉ. विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोधार्थी
रणजीत यादव

शोध-परामर्शदाता
प्रो. गोपेश्वर सिंह
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

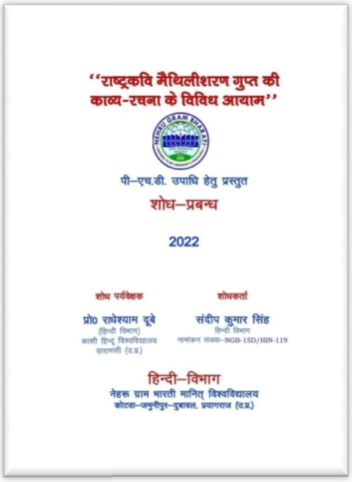
शोध-परामर्शदाता
डॉ. सुधीर कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
पत्राचार महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी-विभाग
कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
2015

- इनकी कविता में रीतिकाव्य धारा की दो प्रवृत्तियाँ शामिल है– रीतिबद्ध तथा रीतिमुक्त।
- इनकी कविता बहुआयामी छवि के साथ प्रकृति, प्रेम, पर्व–त्योहार, लोकजीवन के संस्कार, आहार–विहार, खान–पान, वस्त्र–परिधान, पारिवारिक जीवन के हर्ष–विषाद, ईश्वरीय आस्था, गंगा–यमुना–सरस्वती का संगम, बुंदेलखण्ड की संस्कृति की संजीदा उपस्थिति के साथ संयुक्त परिवार के मधुर संबंधों की सुन्दर व्याख्या है।
- पति–पत्नी, देवर–भाभी, सास, जेठानी, सखी–सहेली, ससुराल, मायका, मेला–हाट, बाजार, वहाँ की रंग–बिरंगी वस्तुएँ सिन्दूर, पायल, बिंदी, रंग–बिरंगे परिधानों, फलों में आम, अनार, मिठाई में जलेबी, कलाकंद, वहीं रंगों में हरा, लाल, पीला, गुलाबी, बैंगनी की भी चर्चा है।
- स्त्री मनोविज्ञान की जितनी सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी पद्माकर को थी उतनी शायद ही रीतिकालीन कवियों में हो, वह कब, क्या, कैसे, किस प्रकार की चेष्टाओं से अपने मन के हाव–भाव को व्यक्त करेगी, इसकी बहुत बारीक जानकारी पद्माकर को थी।
- नायक और नायिका के अतरंग और बहिरंग समस्त संबंधों की झलक पद्माकर की कविता में अपने अंदाज में मौजूद है।

3. **संदीप कुमार सिंह (2022) ने** ''मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचना के विविधआयाम''नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने पाया कि–

- गुप्त जी में यह अपरिवर्तनशील दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति एवं परम्परा से प्राप्त है।


''राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-रचना के विविध आयाम''
पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
2022
शोध पर्यवेक्षक
प्रो0 राधेश्याम दूबे
(हिन्दी विभाग)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ.प्र.)
शोधकर्ता
संदीप कुमार सिंह
हिन्दी विभाग
नामांकन संख्या–NGB-15D/HIN-119
हिन्दी–विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
कोटवा–जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ.प्र.)

- गुप्तजी भारतीय संस्कृति के आदर्श प्रेरित जीवन विधान को इंगित करने हेतु पौराणिक प्रबन्ध साकेत, वन वैभव, सैरन्ध्री, नहुष, वक संहार तथा ऐतिहासिक रचना सिद्धराज, कुणाल गीत, यशोधरा, विष्णुप्रिया इत्यादि एवं युगीन प्रबन्ध काव्य अजित, किसान, पंचवटी, हिडिम्बा इत्यादि के कथा को स्वीकृति प्रदान करते हैं।
- अपनी कृतियों के माध्यम से त्याग, अहिंसा, धर्म, विश्वप्रेम, नैतिकता, करुणा इत्यादि शाश्वत मूल्यों की स्थापना के इच्छुक रहे हैं तथा इन सर्वाभौमिक आदर्शों की प्रेरणा देते हुए ही प्रत्येक पात्र एवं घटना की प्रस्तुति करते है।
- उनके राम आदर्श मानव हैं, जो विश्व–कल्याण की भावना से अवतरित हैं एवं भू पर स्वर्ग की संस्थापना करने आए हैं।
- सम्पूर्ण साकेत एक आदर्श परिवार का जीवन्त स्वरूप है। 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया', 'उर्मिला', 'कुन्ती' इत्यादि ऐसी पौराणिक, ऐतिहासिक नारियाँ हैं जो अपने आदर्श मानव मूल्यों के निर्वाह के कारण पारम्परिक गरिमा से कवि को अलग नहीं होने देती।

- गुप्त जी कर्म के प्रति मानव मात्र को सजग रहने का संदेश अपनी प्रबन्ध रचनाओं में देते हैं। उनकी यशोधरा, 'विष्णुप्रिया', 'पंचवटी', 'साकेत', 'द्वापर' इत्यादि प्रबन्ध रचनाएँ तो कर्म से ही जीवन की रक्षा के अंकुर पैदा करती हैं एवं उनकी स्वतन्त्र कविता 'नर हो न निराश करो मन को' भी इसी का अनुकरण है।

- आस्था भाव की प्रवृत्ति के कारण गुप्त जी आदर्श मूल्यों एवं जीवन विधान के केन्द्र में धर्म की प्रतिष्ठा करते हुए पौराणिक ऐतिहासिक तथा युगीन समस्याओं पर आधारित प्रबन्ध काव्यों की सर्जना करते आए हैं तथा भक्तिकाल के कवियों की आस्था को पूर्ववत् प्रतिष्ठित किए दिखलाई पड़ते हैं।

- भाषिक विधान में तुकबन्दी के प्रति आग्रहशीलता यद्यपि उनके शब्द चयन पर भी प्रश्न उठाती है तथापि उनकी सरल, सपाट खड़ी बोली का सहज रूप अत्यन्त आकर्षक है।

- मैथिलीशरण गुप्त का काव्य मात्र सांस्कृतिक चेतना का प्रवर्तक ही नहीं अपितु उसमें आधुनिकता के बिन्दु भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं जो गुप्त जी को अपने समय का प्रतिनिधि कवि बनाते हैं।

- उनकी 'पंचवटी' सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शों का निरूपण करती है तथा तर्कशीलता के साथ साथ नारी–पुरुष की समानता, दलितोत्थान, स्वावलम्बन तथा करुणा एवं अहिंसा की भावना इस कृति के वे पक्ष हैं जो इसे आधुनिक बनाते हैं।

4. **किशोर अशोक वाघ** (2022) ने ''जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य एवं काव्य कीभाषा

एक अनुशीलन'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने पाया कि –


डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद कला संकाय की पीएच.डी (हिन्दी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध

''जयप्रकाश कर्दम के कथासाहित्य एवं काव्य की भाषा : एक अनुशीलन''

शोध-छात्र
किशोर अशोक वाघ
एम.ए., बी.एड्., एम.फिल., सेट

शोध-निर्देशक
प्रो.डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
सरस्वती भुवन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

मार्च - 2022

- डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिंदी के उस दलित साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं जोकि आज विश्व साहित्य बन चुका है।

- दलित साहित्य लेखन की शुरुआत मराठी दलित कहानियों से हुई है। यही परंपरा उत्तर प्रदेश और हिंदी भाषिक प्रदेश में भी चल पडी। आज हिंदी भाषा में विभिन्न विधाओं में दलित साहित्य लेखन हो रहा है।

- सादृश्य रचना, विद्रोह आक्रोश, प्रतीक एवं बिम्ब आदि उनकी भाषा में दिखाई देते है। साथ–साथ दलित पीड़ित, शोषित, बहुजन समाज को एक करने कि चाहत उनके साहित्य से दिखाई देती है।

- जयप्रकाश कर्दम के काव्य में मानवतावाद का स्तर है। पर्यावरण का महत्त्व, एवं संरक्षण की जिम्मेदारी के एहसास की भाषा है।

- इनकी काव्य भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता नारीवादी स्वर का होना भी कहा जा सकता है। क्योंकि नारीवादी लेखन होना यह भी समय की मांग बन बैठा है, जब तक नारी सम्मान की बात न हो।

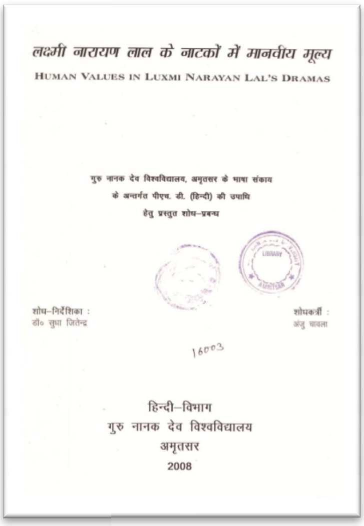
- कर्दमजी की कथा साहित्य की भाषा तेज, तीखी, सर्जनशील और कार्यकुशल है। इनकी भाषा में सजीवता, प्रवाहकता, प्रभावोत्पादकता आयी है।

- इनकी भाषा का असली सौंदर्य यह है कि वह समाज जीवन से जुडी हुई और वह जनभाषा है।

- इनकी भाषा मानवीय समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करती है। जयप्रकाश कर्दम की कथात्म साहित्य भाषा में देशी, अरबी, फारसी, तत्सम, तद्भव अंग्रेजी, संस्कृत, खड़ी बोली आदि के शब्द पाए गए हैं। साथ–साथ विशेषण, समानार्थी, विलोमार्थी, कहावतें, मुहावरे आदि का प्रयोग किया गया है।

5. अंजु चावला (2008) ने ''लक्ष्मी नारायण लाल के नाटकों में मानवीय मूल्य'' नामकशीर्षक

पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि –



लक्ष्मी नारायण लाल के नाटकों में मानवीय मूल्य
HUMAN VALUES IN LUXMI NARAYAN LAL'S DRAMAS

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के भाषा संकाय
के अन्तर्गत पीएच. डी. (हिन्दी) की उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

LIBRARY
AMRITSAR

शोध–निर्देशिका :
डॉ० सुधा जितेन्द्र

शोधकर्त्री :
अंजु चावला

16003

हिन्दी–विभाग
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय
अमृतसर
2008

- लक्ष्मी नारायण लाल के साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण मूल्य उसकी मानवतावादी एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण की उपस्थिति का होना है।

- उनके नाटकों में समकालीन समस्याओं के चित्रण में बेरोजगारी, गरीबी, वर्ग–संघर्ष, स्त्री–पुरुष संबंध का बहुतायत प्रयोग है।

- उनके नाटकों की भाषा जनसाधारण के अनुकूल तथा संवाद बहुत ही प्रभावी होते हैं।

- उनके नाटकों में सामाजिक कुरीतियों और अन्याय के विरुद्ध सुधार की प्रेरणा सदैव मिलती है।

- नारी–जीवन की पीड़ा, संघर्ष और स्वाभिमान का सजीव चित्रण मिलता है।

- उनके नाटकों में भारतीय संस्कृति के मूल्य और पारिवारिक ताना–बाना दिखाई देता है।

6. अजय कुमार यादव (2017) ने''हिंदी में निर्गुण भक्ति काव्य का इतिहास,

लेखनस्वरूप और संकलन''नामक शीर्षक पर शोध किया और यह पाया कि –



हिन्दी में निर्गुण भक्ति–काव्य का इतिहास
लेखन : स्वरूप और समस्याएँ

THE HISTORY-WRITING OF NIRGUN BHAKTI-POETRY IN
HINDI : FORM AND PROBLEMS

(HINDI MEIN NIRGUN BHAKTI-KAVYA KA ITIHAS LEKHAN :
SWAROOP AUR SAMSYAYEN)

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध

प्रो. देवेन्द्र कुमार चौबे
(शोध-निर्देशक)

प्रो. मैनेजर पाण्डेय
(सह शोध-निर्देशक)

अजय कुमार यादव
(शोधार्थी)

JNU

भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110067
(सन् 2017)

- निर्गुण भक्ति काव्य का उद्भव 14वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य हुआ, जब समाज में जातिवाद, धार्मिक पाखंड और सामाजिक विषमताएँ व्याप्त थीं।

- संत कवियों ने इन कुरीतियों का विरोध करते हुए एक ऐसे ईश्वर की कल्पना की जो निराकार, निर्गुण और सर्वव्यापक हो। उन्होंने मूर्तिपूजा, अवतारवाद और

कर्मकाण्डों का खंडन किया और आत्मज्ञान, प्रेम और समरसता पर बल दिया।

- निर्गुण भक्ति काव्य की भाषा जनभाषा थी, जिसमें साखी, सबद, रमैनी आदि छंदों का प्रयोग हुआ।

- संत कवियों ने लौकिक प्रतीकों के माध्यम से आध्यात्मिक अनुभूतियों को व्यक्त किया। उदाहरणस्वरूप, कबीर ने ईश्वर को 'राम' कहकर संबोधित किया, जो किसी विशेष धर्म का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक सत्ता का प्रतीक था।

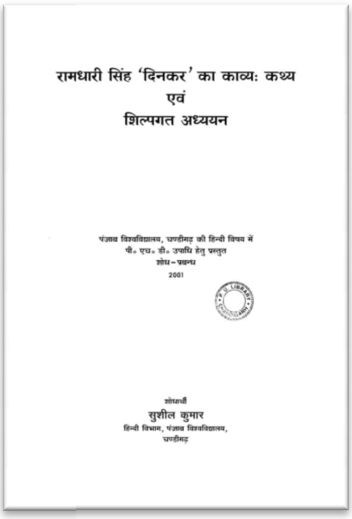
- इस धारा के प्रमुख कवियों में कबीर, रैदास, दादूदयाल, गुरु नानक आदि शामिल हैं। कबीर का 'बीजक', गुरु नानक का 'गुरुग्रंथ साहिब' और दादू की 'पंचवाणी' इस परंपरा की प्रमुख रचनाएँ हैं।

- इन रचनाओं में सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता और आत्मज्ञान की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है।

- निर्गुण भक्ति काव्य का संकलन मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ। शिष्यों और अनुयायियों ने संतों की वाणी को संग्रहित किया, जिससे ये रचनाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होती रहीं।

- इसने समाज में व्याप्त भेदभाव, पाखंड और अंधविश्वासों का विरोध किया और एक समतामूलक समाज की कल्पना प्रस्तुत की। आज के संदर्भ में भी, निर्गुण भक्ति काव्य की शिक्षाएँप्रासंगिक हैं,जो मानवता, समरसता और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करती हैं।

7. सुशील कुमार (2001) ने ''रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्यः कथ्य एवं शिल्पगत अध्ययन'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि –


रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य: कथ्य
एवं
शिल्पगत अध्ययन

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की हिन्दी विषय में
पी॰ एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
2001

शोधार्थी
सुशील कुमार
हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़

- श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' भारतीय संस्कृति और चिन्ताधारा के इतिहास क्रम में आधुनिक काल के विशिष्ट कवि हैं।

- दिनकर का काव्य छायावादोत्तर हिन्दी कविता के विकास क्रम में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के अंतर्गत भावभूमियों और वैचारिक प्रतिपतियों में प्रकल्पित, सृजित एवं समायोजित है।

- उनके काव्य के कथ्य संबंधी उपादानों में दिनकर इतिहास–बोध और दार्शनिक दृष्टि की महती और सानुपातिक भूमिका रही है जो किसी भी कथ्यगत अध्ययन के लिए आवश्यक है।

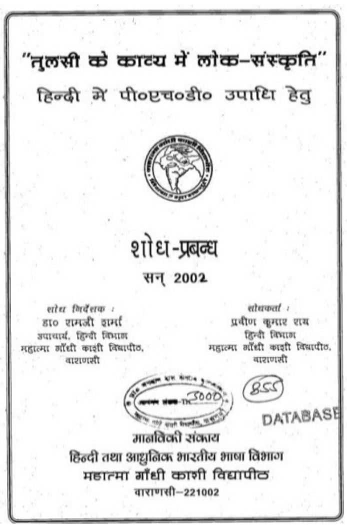
- दिनकर के काव्य में दर्शन की भूमिका व्यापक है। यह दर्शन उनके काव्य में पुराण, मिथक, जीवनी, गाथा तथा रचनागत अनुभव के रूप में आता है और सामान्य अथवा रूढ़ इतिहास के रूप में भी।

- उनकी काव्यचेतना के विकास–क्रम में लक्षित किया जाये तो प्रमुख प्रवृत्तियाँ कुछ इस प्रकार हो सकती हैं–परिवेशगत, जागरूकता, राष्ट्रीय भावना, देश–प्रेम, स्वराज चेतना, रूढ़ियों पर प्रहार, अतीत गौरव–गान, प्रखर विद्रोह के स्वर, प्रगतिशीलता, क्रांति के स्वर, प्रकृति–प्रेम, नारी–भावना और सबसे बढ़कर सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना।

- उनके प्रबंध काव्य विशिष्ट हैं। कुरूक्षेत्र युद्ध दर्शन का काव्य है। रश्मिरथी गुणागार और उदात्त भावापन्न कर्ण की सभी स्तरों पर दारुण उपेक्षाओं की प्राणद्रावी गाथा है। उर्वशी नारी–पुरूष के संबंधों के कतिपय सनातन भाव–बिन्दु का स्पर्श करती है। इस अप्रतिम रचना को देखकर ही आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने प्रश्न उठाया था कि दिनकर विभापुत्र हैं अथवा क्षोक की संतान?

- दिनकर का शिल्प कौशल अप्रतिम है। भाषा, शैली, शब्द प्रयोग से लेकर बिंब, प्रतीक, पुराण मिथक आदि शिल्पगत उपकरणों में भी एक उदात्तता का वैभ्राज्य है। निष्कर्षतः काव्यगत कथ्य और शिल्प की दृष्टि से दिनकर को छायावादोत्तर हिन्दी कविता के इतिहास में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का उदात्त शिखर–सीमान्त कहा जा सकता है।

8. प्रवीन कुमार राय (2002) ने ''तुलसी के काव्य में लोक–संस्कृति'' नामकशीर्षक पर शोध कार्य किया और इन्होंने यह पाया कि –


"तुलसी के काव्य में लोक–संस्कृति"
हिन्दी में पी०एच०डी० उपाधि हेतु
शोध-प्रबन्ध
सन् 2002
शोध निर्देशक :
डा० रामजी शर्मा
उपाचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी
शोधकर्ता :
प्रवीण कुमार राय
हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी
855
DATABASE
मानविकी संकाय
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी–221002

- तुलसी ने अपने संपूर्ण काव्य में सहिष्णुता तथा अपूर्व समन्वयवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है–लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय। इनकी रचनाओं में 'रामचरितमानस' शुरू से आखिर तक समन्वय काव्य है।

- सांस्कृतिक समन्वय के अंतर्गत तुलसी ने न केवल हिन्दू और मुसलमानों की संस्कृति में समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की वरन् विभित्र जाति–वर्गो में भी समन्वय का शतावनीय प्रयास किया।

- डा० उदयभानु सिंह के अनुसार तुलसी साहित्य में पाँच मित्र जातियों के पात्रों का चित्रण हुआ है देव, दानव, नर, वानर और किन्नर। इनकी संस्कृति का तुलसी ने अंकन किया है। इसके अतिरिक्त तुलसी ने 'मानव–संस्कृति' में भी समन्वय का प्रयास किया है जैसे– राजन्य–वर्ग, जन–साधारण और कोल–किरात।

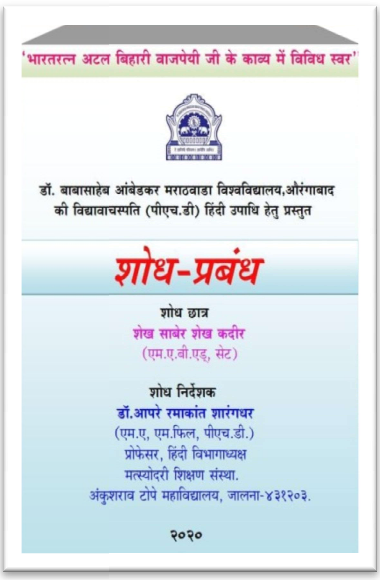
- गोस्वामी तुलसीदास जी का काव्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता का दर्पण है। इसमें भारतीय सामाजिक व्यवस्था, मनः संस्कार और आचार–विचार का जैसा विशद चित्रण किया गया है, वैसा अन्य कहीं किसी साहित्य में दिखाई नहीं पड़ता है। हिन्दुओं के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के संस्कारों का बहुत महत्व माना गया है।

- तुलसी का काव्य आज भी प्रेरक और उपयोगी है।तुलसीदास ने अपने काव्य में विभिन्न प्रकार के 'लोक–जीवन' के प्रसंगों, मुहावरों और लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग किया है। इसका भी समीक्षात्मक विवेचन किया गया है। उनके द्वारा हमें ऐसी महान रचनाएँ प्राप्त हुई हैं जिनके कारण आज हम सभी अपना मस्तक विश्व साहित्य जगत में गर्व से ऊँचा कर सकते हैं।

9. **शेख साबेर शेख कदीर** (2020) ने ''भारत रत्न अटलबिहारी बाजपेई जी के

काव्य में विविध स्वर'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने पाया कि –

- अटल जी का कृतित्व बहुत ही व्यापक एवं सराहानीय है। कवि अटल पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारधारा का प्रभाव रहा है। उनका कृतित्व संघ के शाखाओं से होते हुए पत्रकारिता, राजनीति से गुजरते हुए साहित्य में लीन रहा। अटल जी का काव्य सृजन हिन्दी साहित्य में अनमोल योगदान का प्रमाण है।



- आधुनिक कवियों में अटल जी एक प्रमुख कवि है। क्योंकि वे राजनीति शिखर पुरूष होते हुए भी उन्होने काव्य सृजान किया है। अटल जी के अब तक पाँच काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यह काव्य संग्रह भारतीय हिंदी साहित्य में उनके योगदान का प्रमाण है।

- अटल जी की कविताएँ राष्ट्रीयता का स्वर भरती हैं। उनकी अनेक कविताएँ राजनीति विषमता तथा सत्ताधारीयों की पोल खोलती है। सामाजिक विसंगति भरे जीवन पर प्रकाश डालती है। इसी के साथ ही उनके अनेक अन्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुके है।

- अटल जी का रचना संसार बहुआयामी है। अटल जी को पद्य संरचना का वैभव प्राप्त था ही लेकिन गद्य क्षेत्र में भी वह पीछे नहीं थे। उनके भाषण कोमल भावनाओं का सरस संचार करते हुए, तिलमिला देने वाला प्रखर ओजस्वी प्रहार करते है। व्यंग लेख इतने धारदार हुआ करते थे कि सहृदय पाठक सोचने के लिए बाध्य हो जाता था।

- अटल जी अपनी विविध कविताओं के आधार पर बोलना चाहते थे। इसलिए अटल जी के काव्य में विविध स्वर दिखाई देते है। उनके इसी प्रयास के कारण ही जिस काव्य का निर्माण हुआ है, उसके आधार पर हिंदी कविता और हिन्दी समृद्ध, सघन और सुघटित हुई है।

- अटल जी के काव्य निर्माण से समाज, देश, राष्ट्र व विश्व को मानव मंगल, विश्व मंगल की नई दिशा मिली है।

10. **विपुल कुमार हर्षदराय रावल (2010)** ने ''हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्यः एकअध्ययन'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि –

- परसाई जी की रचनाओं में समाज की विसंगतियाँ और राजनीतिक विडंबनाओं पर व्यंग्य का तीखा प्रहार दृष्टिगोचर होता है।

- उनकी रचनाएँ सामान्य जन जीवन के, संघर्ष और उसके दुख–दर्द को सरल भाषा में प्रस्तुत करती हैं।

- उनकी भाषा बोलचाल की अत्यंत सरल एवं सहज होती है, जिससे पाठक सीधे जुड़ जाता है।

- समाज, राजनीति एवं प्रशासन की सच्चाई को अपने व्यंग्यात्मक कटाक्ष से प्रस्तुत करते हैं।


सरदार पटेल विश्व–विद्यालय, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
की ओर से पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य : एक अध्ययन

प्रस्तुत कर्ता :
विपुलकुमार हर्षदराय रावल
व्याख्याता – श्री एम. पी. राठवा आर्ट्स कोलेज
मु.पो.ता. – पावी जेतपुर
जिल्ला – वडोदरा (गुजरात)

निर्देशक :
डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी
आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्व–विद्यालय
वल्लभ–विद्यानगर

सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

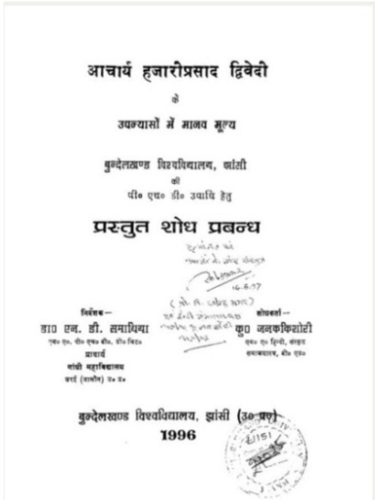
अप्रैल : २०१०

- परसाई जी की भ्रष्टाचार, राजनीतिक पाखंड, जैसे समाज में व्याप्त मुद्दों पर पैनी दृष्टि रहती है।

- उनके व्यंग्य में नैतिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की भावना की स्पष्ट छवि दिखती है जिससे उनके पात्र साधारण होते हुए भी जीवंत हो उठते हैं।

- परसाई जी ने व्यंग्य को हल्के हास्य से ऊपर उठाकर गंभीर सामाजिक विश्लेषण का माध्यम बनाया।

11. कु0 जनककिशोरी (1996) ने ''आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में मानव मूल्य'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि –


आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
के
उपन्यासों में मानव मूल्य
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी
की
पी० एच० डी० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध
निर्देशक—
डा0 एन. डी. समाधिया
प्राचार्य
शोधकर्ता—
कु0 जनककिशोरी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ० प्र०)
1996

- द्विवेदी जी के उपन्यासों में करुणा, सहानुभूति,सत्य, प्रेम और ईमानदारी की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- उनके पात्र कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और संघर्ष के सिद्धांतों के मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं।
- सामाजिक और मानव मूल्यों के साथ–साथ धैर्य, सहिष्णुता और समाजसेवा के भाव का दर्शन उनके उपन्यासों में खूब दिखाई देता है।
- उनके उपन्यासों में नारी पात्र सशक्त और आत्मनिर्भर हैं, जो नारी सम्मान और स्वतंत्रता का संदेश देते हैं। साथ ही जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने और आत्मिक विकास की दिशा में बढ़ने का संदेश देते हैं।
- द्विवेदी जी जाति, वर्ग और भेदभाव को नकारते हुए समानता और भाईचारे के साथ परिश्रम और स्वावलंबन को जीवन में आवश्यक मानते हैं।
- भारतीय संस्कृति का गौरव बनाए रखने के साथ–साथ अंधविश्वास और रूढ़ियों का विरोध तथा प्रकृति से प्रेम, उसका संरक्षण एवं संवर्धन उनके उपन्यासों में मिलता है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा के काव्य सृष्टि के प्रतिमान, ''पद्माकर के काव्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन", "मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचना के विविध आयाम", "जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य एवं काव्य की भाषा एक अनुशीलन", लक्ष्मी नारायण लाल के नाटकों में मानवीय मूल्य", "रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य कथ्य एवं शिल्पगत अध्ययन", "तुलसी के काव्य में लोक–संस्कृति", "भारत रत्न अटलबिहारी बाजपेई के काव्य में विविध स्वर", "हरि शंकर परसाई का व्यंग साहित्यः एक अध्ययन", "हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यसों में मानव–मूल्य" आदि के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया किन्तु "आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता" पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

3.2 आनंद 'अभय'जी की वंश परम्परा

3.3 अध्ययन यात्रा

3.4 गृहस्थ जीवन

3.5 अध्यापन यात्रा

3.6 आनंद 'अभय' जी की यात्राएँ

3.7 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

3.8 साहित्यिक एवं काव्यगत विशेषताएँ

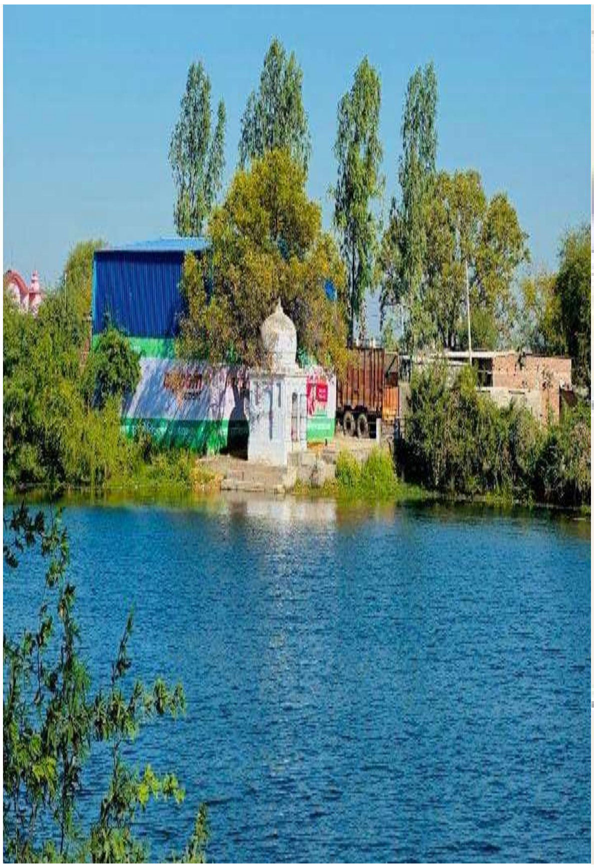
तृतीय अध्याय

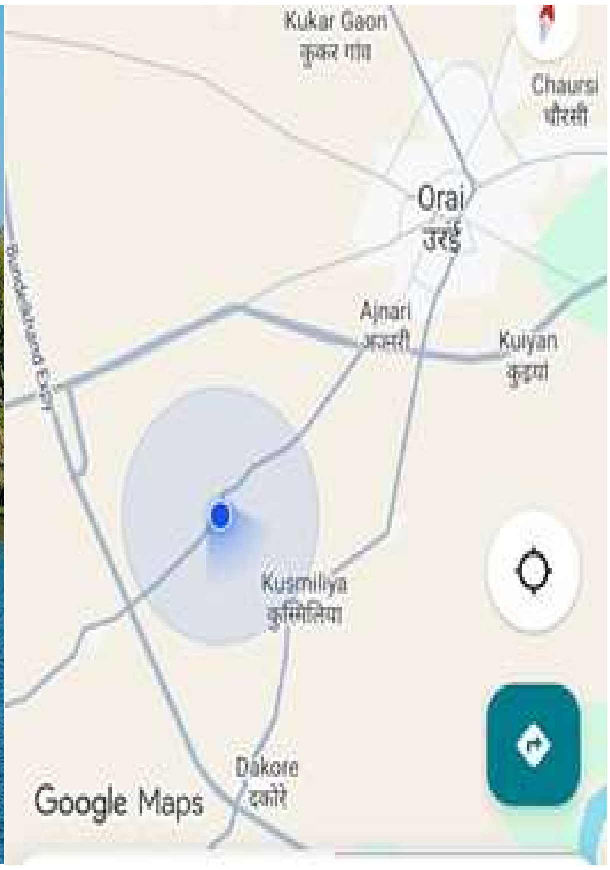
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

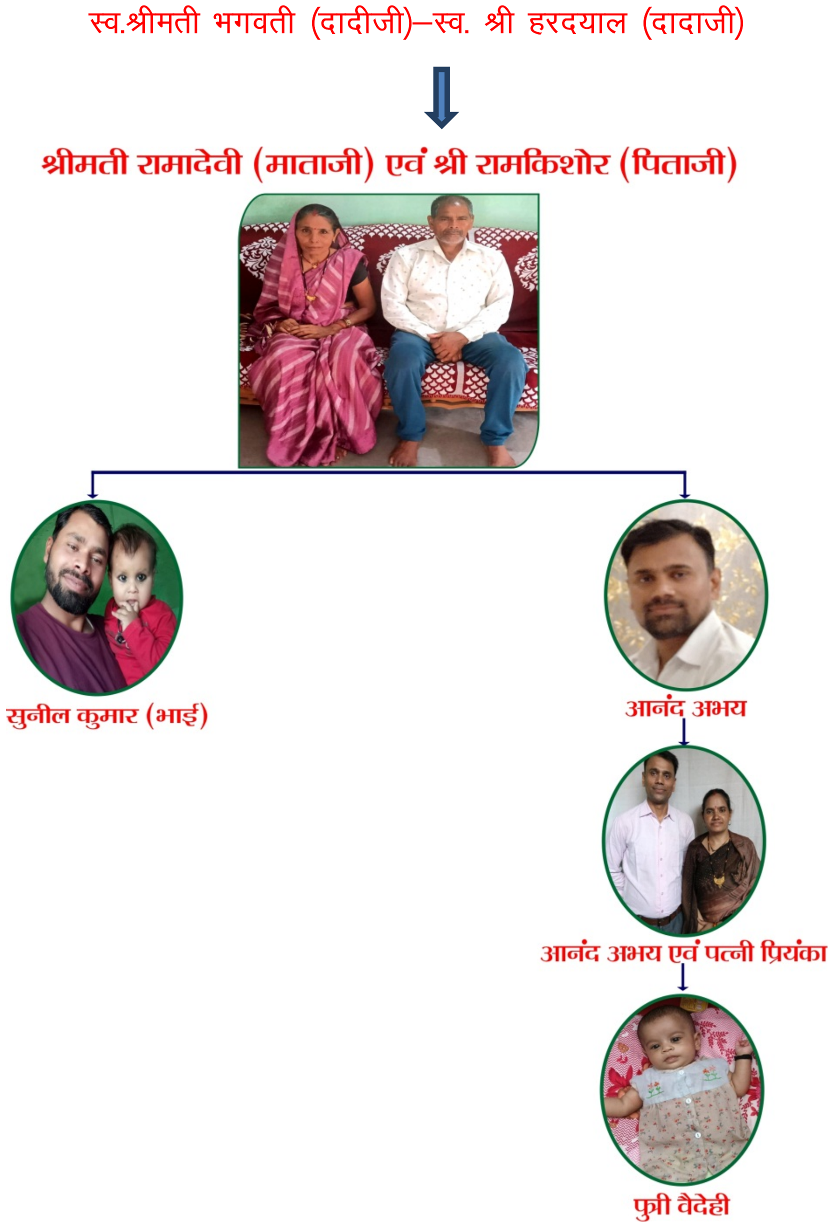


उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र की धरती पर जन्मे आनंद 'अभय' का जन्म 11 जुलाई, 1984 को मुख्यालय से 10 कि.मी. दूर जालौन–जनपद के चिल्ली ग्राम के मध्यमवर्गीय किसान परिवार में हुआ। इनका बचपन अभाव एवं संघर्ष में बीता। इनके पिता सामान्य कृषक हैं। आनंद 'अभय' जी अपने परिवार की गरीबी को 'आर्थिक अभाव' के रूप में व्यक्त करते हैं तथा संघर्ष को प्रगति का पैमाना कहकर संबोधित करते हैं। इनके पिताजी श्री रामकिशोर जी एवं माताजी श्रीमती रामा देवी दोनों ही शिक्षित हैं। इनके पिता जी आजीविका के लिए कृषि कार्य के साथ–साथ श्रमिक कार्य भी करते थे। इनके पिताजी इनको बाहर पढ़ा पाने में असमर्थ थे, फिर भी सामर्थ्य के अनुसार पूर्ण प्रयास किया।





3.2 आनंद 'अभय'जी की वंश परम्परा



आनंद 'अभय' के परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त अनुज सुनील कुमार, पत्नी प्रियंका, अनुज बधू सविता, पुत्री वैदेही एवं भतीजा वयम से भरा–पूरा परिवार है। आनंद 'अभय' पर उनके दादाजी की धार्मिक प्रवृत्ति एवं संस्कारों का उचित असर दिखाई देता है। आनंद 'अभय' की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही निजी प्राथमिक विद्यालय श्री राजीव गाँधी शिक्षा निकेतन में हुई तथा उच्च प्राथमिकशिक्षा गाँव के ही जूनियर हाई स्कूल में हुई।

3.3. अध्ययन–यात्रा

आनंद 'अभय' की प्रारम्भिक शिक्षा घर के संस्कृति समृद्ध वातावरण में हुई। इनका अधिकतर समय धार्मिक संस्कारों के धनी दादा स्व. श्री हरदयाल जी के सानिध्य में व्यतीत हुआ तथा ननिहाल में नानाजी स्व.श्री रामसहोदर जी के आवास में संग्रहीत पुस्तकों से बने लघु पुस्तकालय एवं उनके मार्गदर्शन से पठन–पठन में रुचि उत्पन्न हुई। आनंद 'अभय' को

परिवार से मिले सांस्कारिक गुण जिनकी भूमिका जीवन पर्यन्त रहती है, माताजी एवं पिताजी से प्राप्त हुए।

आनंद 'अभय' जी की प्राथमिक शिक्षा गाँव के ही आर्थिक संसाधनों से जूझ रही सामान्य सी निजी प्राथमिक पाठशाला में हुई, जिसका वर्तमान में अस्तित्व ही समाप्त हो चुका है, परंतु शिक्षकों का योगदान अमर हो चुका है।पूर्व माध्यमिक शिक्षा कक्षा 6 से 8 तक गाँव के ही विद्यालय में सम्पन्न हुई।



कक्षा 9 से 10 तक की शिक्षा गाँधी इण्टर कॉलेज उरई से संबद्ध एक निजी विद्यालय सरस्वती बाल मंदिर से प्राप्त हुई।कक्षा 11 से 12 तक की शिक्षा उरई नगर के ही सनातन धर्म इंटर कॉलेज से प्राप्त की।

स्नातक तथा परास्नातक की शिक्षा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से संबद्ध महाविद्यालय दयानंद वैदिक महाविद्यालय, उरई नगर से प्राप्त की। स्नातक शिक्षा के समय आनंद 'अभय' को अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। जिसमें घर–घर जाकर गृह शिक्षण करने के साथ–साथ स्वयं की शिक्षा एवं अपने अनुज की शिक्षा को पूर्ण कराने से लेकर पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वाहन करने की प्रवृत्ति ने आनंद 'अभय' को मजबूत इच्छा–शक्ति वाला एक साहित्य–प्रज्ञ के रूप में अंकुरित व्यक्तित्व प्रदान किया।



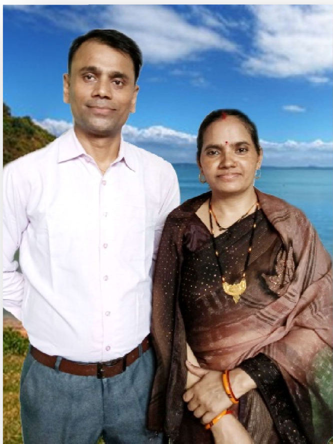
बी0एड0 की शिक्षा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से संबद्ध गाँधी महाविद्यालय उरई से प्राप्त की। इसके अलावा,एम.एड. की शिक्षा अतर्रा पी.जी. कॉलेज अतर्रा, बाँदा से प्राप्त की।



उरई तहसील में अध्ययन काल में आनंद 'अभय' को अच्छे शिक्षकों का मार्गदर्शन मिला। कुछ शिक्षकों को आनंद 'अभय' याद करते हुए बताते हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनमें से श्री धर्मनाथ प्रसाद श्रीवास्तव (हिंदी और अंग्रेजी के कुशल प्रवक्ता), श्री मनोज कुमार मिश्रा (भौतिक विज्ञान के प्रवक्ता), स्नातक शिक्षा के दौरान डॉ0 अभय करन सक्सेना, डॉ0 डी.के. सिंह एवं डॉ0 अतुल बुधौलिया विशेष स्मरणीय रहे हैं। इन्हीं सबके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन से उनके ऊपर साहित्य दर्शन में विशेष रूप से प्रभाव पड़ा है।

3.4 गृहस्थ जीवन

आनंद'अभय' का विवाह 7 मई सन् 2019 में एक सामान्य कृषक परिवार से संबंधित अंग्रेजी साहित्य में स्नातक उत्तीर्ण कन्या प्रियंका के साथ सम्पन्न हुआ।



आनंद'अभय' मानते हैं कि उनके जीवन में पत्नी के रूप में जीवन साथी का विशेष योगदान रहा है, जिसकी वजह से साहित्यिक सृजन को नवीन आयाम प्राप्त हुआ है।

आनंद'अभय' जी के वैवाहिक जीवन में रचनात्मकता और लेखन का बड़ा योगदान रहा तथा वार्तालाप, विचार–विमर्श एवं अन्य मुद्दों को समझने में सहज अविस्मरणीय रहा।

आनंद'अभय' जी को संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति हुई जिसका जन्म, सन् 2025 में उरई शहर में हुआ।

3.5 अध्यापन यात्रा

आनंद 'अभय' की अध्यापन यात्रा का आरंभ छात्र जीवन के दौरान 1999 से उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के उरई शहर से ही हो गया था, जिसकी शुरुआत मकान मालिक के

द्वारा अपने बच्चों को पढ़ाने के अत्यधिक आग्रह से हुई,जिसका प्रयोग तात्कालीन समय की आर्थिक आवश्यकता के समाधान हेतु विकल्प चयन के रूप में भी किया गया।

इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गाँव में ही निज आवास पर ही अध्यापन कार्य प्रारंभ कर दिया। कुछ समय पश्चात पुनः उरई नगर में नवीन आशाओं को खोजने हेतु विभिन्न विद्यालयों, संस्थाओं एवं गृह–शिक्षण का कार्य प्रारंभ किया। स्नातक शिक्षा के उपरांत कम्प्यूटर कोर्स पीजीडीसीए में अध्ययन एवं उसी कक्षा के अध्ययनरत सहपाठियों को पढ़ाना आनंद 'अभय' के आत्मबल को दर्शाता है। किसी विषय को सीखकर उसे नवीनता एवं रोचकता के साथ अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाना आनंद 'अभय' की प्रतिभा का एक अन्य सकारात्मक पक्ष है जो उन्हें अन्य अध्यापकों से भिन्न बनाता है।आगे अंग्रेजी के प्रवक्ता के रूप में नगर के कई निजी शिक्षण संस्थानों, विद्यालयों, गृह–शिक्षण, एवं भिन्न–भिन्न स्थानों पर बैच लगाकर अध्यापन कार्य किया।

वर्तमान में आनंद 'अभय' विद्यार्थियों को रोजगारपरक बनाने हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु अध्यापन कार्य के साथ–साथ साहित्य सृजन में लगे हुए हैं।



3.6 आनंद 'अभय'की यात्राएँ

आनंद 'अभय' को देश के विभिन्न प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों पर भ्रमण करना खूब भाता है।उत्तर भारत के राज्यों राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश के अलावा पूर्व भारत एवं मध्य–भारत के राज्यों, बिहार, झारखण्ड एवं ओडिशा में भ्रमण का अवसर प्राप्त हुआ है।

आनंद 'अभय' बताते हैं कि हमारे देश के मनोरम स्थल विश्व में किसी किसी अन्य देश से पीछे नहीं है। यहाँ के दुर्लभ स्थल सांस्कृतिक, प्राकृतिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को हजारों वर्षों से आज भी संभाले हुए हैं। यात्राओं और भ्रमण के बारे में आनंद 'अभय' कुछ पंक्तियाँ बोलते हैंः–

घूम लो दुनियाँ आस रहे लौं,

देख लो पर्वत नदी कहीं को।

दरस करौ मन सांस बनी लौं,

अवसर है तो यदि कहीं को।।

मनोरंजनात्मक यात्राओं में माउंट आबू, जयपुर, उदयपुर,खनुआ (खानवा), कलिंजर, आगरा, जगन्नाथपुरी, इंदौर, भोपाल, रांची, चंडीगढ़, राजस्थान आदि प्रमुख हैं तथा नर्मदा नदी, बेतवा नदी तथा यमुना नदी के किनारे के हिस्से एवं अतीत के किस्से आनंद 'अभय' को बहुत भाते रहे हैं।

3.7 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

आनंद 'अभय' सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य संवेदनशील रचनाकार एवं कवि हैं। उनका हृदय छल–छिद्र से दूर सहजता में रमता है। आनंद 'अभय' के व्यक्तित्व की उल्लेखनीय उपलब्धि शोध तथा काव्य लेखन है। आनंद 'अभय' का व्यक्तिगत मानना है कि अच्छी कविता मनुष्य के अनावश्यक तनाव को दूर कर देती है तथा प्रेरणा देकर नवीन ऊर्जा का संचार कर देती है। मौलिकता, वास्तविकता को स्वीकार करना, अपनी संस्कृति का सम्मान करना तथा कार्य क्षेत्र के साथ–साथ अपने गाँव, खेती, तथा अपने माता–पिता का ध्यान रखना, देश एवं समाज को महत्व देना आनंद 'अभय' के व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्ष हैं।

आनंद 'अभय' ऐसा मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाइयों के साथ कुछ बुराइयाँ भी होती हैं, लेकिन अगर अच्छाइयों की मात्रा अधिक हैं, तो बुराइयाँ अपना अस्तित्व खो देती हैं। समाज में अच्छे लोग भी हैं और बुरे लोग भी। बुरे लोगों के चिंतन में ऊर्जा व्यय करने से अच्छा सकारात्मक दर्शन प्राप्त करना अधिक लाभप्रद रहता है, जो नवीन अवसरों का सृजन करता है।

कार्य क्षेत्र के विषय पर आनंद अभय कहते हैं कि "जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए सबसे आवश्यक यह है कि प्रत्येक क्षण प्राथमिकताओं का चयन पूरे धैर्य, संयम एवं नैतिकता के साथ किया जाए, किसी तरह के पूर्वाग्रह के साथ नहीं।" आनंद 'अभय' सदैव एक प्रेरक पंक्ति बोलते हैं– ''चलते जाओ, चलते जाओ। मार्ग भी मिलेगा, मार्गदर्शन भी मिलेगा।''

आनंद अभय गलत का विरोध कर देते हैं, जिसका खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है तथा ईमानदारी के रास्ते ही बड़े पदों पर जाने की इच्छा को ही उचित मानते हैं। अपने विद्यार्थियों के बीच एक प्रेरक शिक्षक के रूप में आनंद 'अभय' अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं।

3.8 साहित्यिक एवं काव्यगत विशेषताएँ

- आनंद 'अभय' के काव्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, लोक–संस्कृति, भ्रष्टाचार, सदाचार एवं वर्तमान राजनेताओं तथा शिक्षा जैसे विषयों का समावेशन मिलता है।
- आनंद 'अभय' सामाजिक को कुप्रथाओं प्रकृति से छेड़–छाड़ और आधुनिक बनने की अंधी दौड़ के लिए व्यंग्यात्मक शैली का चयन करते हैं।

- पशु–पक्षी, नदी,झरना, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, विरासत, स्मारक, नैतिक–मूल्य, सामाजिक न्याय, ऐतिहासिक चेतना, राष्ट्रवाद और देशभक्ति जैसे विषयों पर लिखना आनंद 'अभय' को भाता है।

- हिंदी के साथ–साथ बुंदेलखंडी,उर्दू तथा अंग्रेजी में भी लिखना आनंद 'अभय' की विशेषता है। आनंद 'अभय' की भाषा शैली जन साधारण की भाषा के अनुरूप सरल तथा सुग्राह्य रहती है।

- आनंद 'अभय' साहित्य के क्षेत्र में एक ऐसी प्रतिभा हैं जिन्होंने स्वयं को साहित्य के क्षेत्र में प्रकाशित होने का मोह नहीं रखा, जिसके कारण उनका साहित्य समाज तथा देश के सामने अब तक नहीं आ सका।

- आनंद 'अभय' समाज के निरंतर पतित होने वाले, मूल्यों के ह्रास, संवादहीनता, मनमुटाव, कटुता, कलह, निम्नस्तरीय शब्द चयन प्रवृत्ति, संस्कृति पर कुठाराघात जैसे विषयों के निराकरण हेतु निरंतर अपनी लेखनी चलाते रहते हैं।

- आनंद 'अभय' कहते हैं कि एक सच्चा साहित्यकार अपनी भावनाओं को शब्दों में उतारते समय न विधा का बंधन मानता है न शब्दों का मानक। जिस विधा में उसके हृदय के भाव अच्छी तरह से व्यक्त होते हैं, वहीं उसके साहित्य की विधा हो जाती है। हृदय की गहराई से मन की उमंग से उत्पन्न होने वाले भाव ही कविता हैं।इसमें चिंतन, विश्लेषण, अनुभव एवं समाज–दर्शन की प्रक्रिया शामिल है।

हिन्दी काव्य की शुरुआत 11वीं सदी के आदिकाल(वीरगाथा काल), चंदरबरदाई के समय से ही मानी जाती है। आनंद 'अभय' कविता के विषय के रूप मेंअपने विचार रखते हैं। वे चाहते हैं कि 21वीं सदी की कविता में ग्रामीण जीवन और ग्रामीण परिवेश, जो कि कविता से लुप्त सा होता जा रहा है, उसे पर्याप्त स्थान प्राप्त हो,क्योंकि आज के लेखनीकार शहरीकृत होते जा रहे हैं तथा गाँवों पर ध्यान नहीं देते, जिससे उनकी कविताओं में नकलीपन रहता है। आजकल की कविताएँ या तो किसी की चरण वंदना में लगी होती हैं या फिरनिम्नस्तरीय शब्दावली से भरी रहती हैं। कितने शब्दकार हैं जो इनका विरोध जताते हैं? वर्तमान समय में बिना भय का दर्शन लेखन दर्शाने वाले साहित्यकार बहुत ही कम दिखाई देते हैं।

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना, निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

4.1 प्रकाशित लेख

4.1.1 आलोचनाः सच्चा आलोचक

4.2 अप्रकाशित खण्डकाव्य

4.2.1 एकलव्य का न्याय

4.3 आनंद दोहावली

4.4 लघु गीतमाला

4.5. अप्रकाशित कविताएँ

4.5.1 बरगद का वृक्ष

4.5.2 रूकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं

4.5.3 गौरैया

4.5.4 आज का किसान

4.5.5 जनपद जालौन के नदी संगम

4.5.6 बंद हो रहे विद्यालय

4.5.7 नवयुग के राही

4.5.8 मंजिल के राही

4.5.9 हुंकार

4.6 बाल कविताएँ

4.6.1 बरखा रानी

4.6.2 चिड़िया रानी

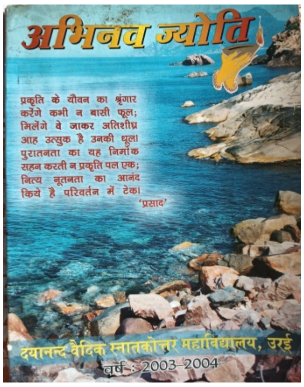
चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना, निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

आनंद 'अभय' जी निरंतर लेखन कार्य में लीन रहे।लेखन कार्य के द्वारा प्रकृति एवं संस्कृति संरक्षण तथाशुद्ध हिंदी लेखन से काव्य रचना तक की उनकी यात्रा एक समर्पित साधक की कालजयी यात्रा रही है। इन्होंने काव्य रचना के साथ–साथ आलोचना के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। इन्होंने अनेक आलोचनात्मक लेख लिखे, काव्य रचनाएँ की। प्रकृति की नैसर्गिक मनोरमता से जुड़ाव तथा बाजारीकरण की प्रवृत्ति से दूर रहने के कारण इनके काव्य एवं साहित्यिक उपलब्धियाँबहुत कम ही प्रकाश्यमान हो सकी हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है–

4.1 प्रकाशित लेख

4.1.1 आलोचनाः सच्चा आलोचक



आनंद 'अभय' इस अलोचनात्मक लेख में अपना राजनैतिक दार्शनिक, आध्यात्मिक, वैश्विक एवं व्यंग्यात्मक अंदाज दर्शाते हैं। कॉलेज कालीन समय में डी0वी0सी0 महाविद्यालय उरई से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अभिनव ज्योति' मेंप्रकाशित हुआ आनंद 'अभय' का प्रथम आलोचनात्मक लेख है। इस लेख में आनंद 'अभय' आलोचना को ही विषय वस्तु बनाकर विश्लेषण करते हैं तथा लिखते हैं कि आलोचना करने वाले व्यक्ति भी कई वर्ग समूहों में विभाजित किए जा सकते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में आलोचना के मापदण्ड को किसी सीमित परिभाषा में बांधना कभी भी न्यायोचित तब तक नहीं हो सकता जबतक कि किसी भी विचार का सभी पैमानों से आंकलन न किया जाए। इस लेख में आनंद 'अभय' ने सुकरात, महात्मा गाँधी, ईसा मसीह एवं हिटलर का उदाहरण देकर अपना वैचारिक दर्शन प्रस्तुत किया है।

आनंद 'अभय'लिखते हैं कि "श्रेष्ठ बनना अनुचित नहीं है, प्रगति करना भी अनुचित नहीं है, परंतु अनुचित साधनों द्वारा श्रेष्ठ बनकर प्रगति करना अनुचित है।"


सच्चा आलोचक

आनन्द कुमार प्रजापति
बी.ए. द्वितीय वर्ष

अभिनव ज्योति 50 | अभिनव ज्योति 51 | अभिनव ज्योति 52

प्रत्येक क्षण नकारात्मक विचार मस्तिष्क में धारण किए रहना ही आलोचना नहीं होती, इसके लिए मन की संकीर्णता को दूर करना बहुत ही आवश्यक होता है। आलोचना करना भी एक कला है। सामान्य लोग केवल अवसर देखते हैं, न कि समय एवं परिस्थिति। राजनेताओं

का आलोचना स्तर विवशता भरा होता है। दार्शनिक एवंप्रबुद्धजनों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण बिना किसी भय के श्रेष्ठ वर्ग के प्रतिनिधित्व को दर्शाता है।

4.2 अप्रकाशित खण्डकाव्य

4.2.1 एकलव्य का न्याय

आनंद 'अभय' के इस खण्डकाव्य के लेख में समाज की कुरीतियों, असमानताओं, पूर्वाग्रह से ग्रसित समाज के प्रश्नों से डटकर लड़ने के साहस, गुरुभक्ति, वैचारिक स्वच्छंदता, कर्मठता, स्वावलंबिता, प्रकृति से घनिष्ठता के साथ–साथ समसामयिक परिवर्तनों की सामाजिक उपस्थिति एवं प्रासंगिकता को दर्शाया गया है।



कौन कौन जानता है,
एकलव्य कौन है?
न कह सका व्यथा कभी,
एकलव्य मौन है।।

इस प्रश्न का उत्तर आज के समाज के उस वर्ग में खोजने से प्राप्त हो सकता है जो वंचित, शोषित, कुपोषित समाज की दृष्टि से, संसाधनों की पहुँच से, सामान्य सुविधाओं से, सहानुभूति से, हर मंच तथा हर प्रपंच सभी से आज दूर बना हुआ है।

कवि ने एकलव्य से प्रभावित होकर अतीत के साथ–साथ वर्तमान के कारण, स्थिति, प्रासंगिकता तथा सुग्राह्यता का वर्णन किया है कि परिस्थितियों पर अलाप–प्रलाप करने से श्रेयकर एक मात्र लक्ष्य निर्धारित कर जुट जाना, किसी से याचना करने से अधिक अनुकरणीय होना चाहिए। यह कथन कि "जो स्वयं की सहायता करता है, ईश्वर उसकी सहायता करताहै", एकलव्य प्रकृति के सभी मनुष्यों पर सार्थक सिद्ध होती है।

"भव्य स्वयं बनना पड़ता,
नव्य स्वयं बनना पड़ता।
एकल मन जब रोता है,
श्रव्य स्वयं बनना पड़ता।।
जब–जब जग ठुकराता है,
बन एकलव्य कोई आता है।
तन मन की आहुति देकर,
सकल विभूति पाता है।।"

काव्यगत की उपरोक्त पंक्तियों की समय के सभी कालखण्डों में उपस्थिति बनी रही है एवं वर्तमान में दृश्यमान है। जब समाज किसी बालक की प्रतिभा में अवरोध बनता है बालक के सामने भविष्य के दो ही विकल्प उपलब्ध होते हैं–स्वयं का नवीन मार्ग प्रशस्त करना या बिना प्रशिक्षण के ही अनुचित मार्ग का अनुसरण करना।

समाज की प्रताड़ना, आलोचना एवं उपालंभ के पश्चात भी अपना मार्ग लक्ष्य तक मापदण्डों के साथचयनित कर पूर्व निष्ठा एवं सम्पर्ण से प्राप्त करना एकलव्य जैसे कर्मवीरों ही खूब भाता है। एकलव्य का चरित्र समाज के प्रत्येक व्यक्ति कोउत्साह एवं प्रेरणा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करना है। एकलव्य एक ऐसा व्यक्तित्व है जो गुरुभक्ति की अद्वितीय एवं अनूठी कथावस्तु को दर्शाता है। यद्यपि समाज उसकी गुरुभक्ति से आहत है, फिर भी समाज

को विनम्र भाव से अपने मनोद्गारों को दर्शाता है एवं जब उसके गुरू पर कोई प्रश्न चिह्न लगता है तो वह दो टूक जवाब देता है–

गुरु से मेरी आस बड़ी है,
जग से बढ़कर प्यास बड़ी है।
मन को भी मैं अर्पित कर दूँ,
तन को भी मैं अर्पित कर दूँ।
रूष्ट नहीं अंगुष्ठ समर्पित,
शीश काट मैं अर्पित कर दूँ।।

एकलव्य एक ऐसा कर्मवीर एवं गुरुभक्त योद्धा है जो कभी परिस्थितियों का रोना नहीं रोता है, न ही स्वयं को आकिंचन कहलवाने में आनंदित होता है। एकलव्य एक ऐसा चरित्र है जिसे केवल कर्म करने का सांकेतिक आदेश मिलता है फिर भी वह उसे अपने पुरुषार्थ, सकारात्मक चिंतन एवं श्रम से पूर्णता की पराकाष्ठा तक ले जाता है।

एकलव्य का दर्शन केवल समाज से लेने में ही भरोसा नहीं रखता बल्कि जो कुछ भी ज्ञान, द्रव्य एवं सम्मान अपने अथक संघर्ष से अर्जित किया है उसे समाज को सौंपने को भी उत्सुक रहता है जिससे समाज का सर्वाधिक भला हो सके।

ज्ञान का प्रसाद थामा, कर प्रयास नित ही निरंतर।
प्रेरणा गुरु आस थी, आभास उर में साध मंतर।।
था मनन का भाव भोजन, ग्राम पुर से दूर रहकर।
क्षुधा जो अशांत थी, अब शांत है निज उर के अंतर।।
काल से दृष्टि मिलाकर, जा सकूँ उच्च भाल कर।
संघर्ष को अब सौंप दूँ, जो रख लिया संभाल कर।।

4.3 आनंद दोहावली

4.3.1 काम करो पूरा करो, आधे में तकरार।
आधे में नहिं मान है, राजा और न खार।।

भावार्थ

कवि आनंद 'अभय' द्वारा रचित इस दोहे में कहा गया है कि किसी व्यक्ति के द्वारा किया गया कोई भी कार्य अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि अधूरे कार्य से सदैव समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं, जिसके कारण न तो सम्मान मिलता है, न ही कार्य प्रदान करने वाला स्वामी, भोजन में नमक की कमी से भोजन करने वाला व्यक्ति, तथा मन में सदैव कटु भाव रखने वाला व्यक्ति कभी संतुष्ट नहीं होता।



नोट– (आधे में नहिं मान है–यमक अलंकार)

1. खार = नमक, दूषित प्रकृति का व्यक्ति
2. मान = सम्मान,बात को स्वीकृति देना

शैक्षिक मूल्यः अधूरा कार्य, परेशानी का प्रतीक।

प्रासंगिकता

प्रस्तुत कविता के माध्यम से प्रबंधन की आवश्यकता का अत्यधिक महत्व है। आज की भरी जिंदगी में अधूरा काम हमें सफलता से दूर कर देता है। यह दोहा हमें हर कार्य को धैर्य और निष्ठा से पूरा करने की प्रेरणा देता है। यदि कोई विद्यार्थी पढ़ाई को बीच में छोड़ दे तो न तो उसे ज्ञान प्राप्त होगा, न ही परीक्षा में सफलता और न ही समाज में सम्मान। राजनीति और प्रशासन में सरकारें या नेतागण अधूरी योजनाएँ और प्रोजेक्ट छोड़ दें तो जनता को कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। व्यवसाय में यदि अधूरा प्रयास किया जाए, तो न लाभ मिलेगा और न ही प्रतिष्ठा। सफलता उन्हीं को मिलती है जो अपने कार्य को आरंभ से अंत तक पूरा करते हैं। समसामयिक संदर्भ में आज हम देखते हैं कि कई विकास योजनाएँ या परियोजनाएँ अधूरी रह जाती हैं, जिनका लाभ आम जनता तक नहीं पहुँचता। यही संदेश इस दोहे में स्पष्ट किया गया है।

यह दोहा हर युग में प्रासंगिक है। यह हमें सिखाता है कि अधूरा कार्य किसी के लिए उपयोगी नहीं होता, इसलिए हर कार्य को पूर्णता तक ले जाना ही सच्ची सफलता और मान–सम्मान का मार्ग है। महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने भारत के मिसाइल प्रोग्राम को तब तक अधूरा नहीं छोड़ा जब तक वह पूरी तरह सफल नहीं हुआ। यदि वे बीच में रुक जाते तो भारत 'मिसाइल मैन' की उपाधि से वंचित रह जाता और देश रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर न बन पाता।उनके पूरे किए गए काम ने ही उन्हें मान–सम्मान और 'भारतरत्न' दिलाया।

यदि स्वच्छ भारत मिशन योजना आधी–अधूरी छोड़ दी जाती तो लोग खुले में शौच से मुक्त न हो पाते। इसके पूर्ण होने पर ही गाँव–गाँव शौचालय बने और स्वास्थ्य व स्वच्छता में सुधार हुआ। अधूरी योजना का कोई मान नहीं होता है लेकिन पूर्ण हो जाने पर इसका सुखद परिणाम सबके सामने उपस्थित हो जाता है।



4.3.2 दुष्ट न छांड़ै दुष्टता, कोटिक जतन विचार।
विषधर तजै न ताड़ना, साधु न मानै हार।।

भावार्थ

कवि आनंद 'अभय' द्वारा रचित इस दोहे में दुर्जन और सज्जन व्यक्तियों के गुणों के बारे में बताया गया है। कवि कहता है कि दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति अपनी दुष्टता का त्याग नहीं करते इसके लिए कोई चाहे तो करोड़ों प्रयत्न ही क्यों न कर ले। ठीक उसी तरह जल में बहते हुए एक बिच्छू को जब एक साधु के द्वारा बचाया जाता है, तो बिच्छू उस साधु को काट लेता है। इस प्रयास में पुनः बिच्छू पानी में गिर जाता है; तथापि साधु उस बिच्छू को बचाने का प्रयास नहीं त्यागता।

शैक्षिक मूल्यः मनुष्य की मूल प्रकृति छिपाए नहीं छिपती।

प्रासंगिक कहानी

एक साधु नदी में स्नान कर रहा था। उसने देखा कि एक बिच्छू पानी में डूब रहा है। साधु को दया आ गई और उसे बाहर निकालना चाहा, लेकिन बिच्छू ने उसके हाथ पर डंक मार दिया। साधु ने फिर भी हार नहीं मानी और बार–बार उसे बचाने का प्रयास किया। यह देखकर एक व्यक्ति बोला, "महाराज! जो आपको डंक मार रहा है, उसे क्यों बचा रहे हैं?" साधु मुस्कुराकर बोले कि "उसका स्वभाव डंक मारना है और मेरा स्वभाव बचाना। यदि मैं अपने स्वभाव को छोड़ दूँ, तो मैं भी बिच्छू जैसा हो जाऊँगा।" कहानी का संदेश है, करुणा एक उत्तम गुण है, जिसको कभी त्यागना नहीं चाहिए।

4.3.3 धीरे–धीरे होत सब, जबरन कछुक न होत।

बूँद–बूँद मधु बनत है, अधिक नसाबत जोत।।



भावार्थ

कवि आनंद 'अभय' द्वारा रचित इस दोहे में कहा गया है कि प्रत्येक कार्य धीरे–धीरे और धैर्य के साथ ही पूर्ण होता है। बिना मन के करने से या करवाने से कुछ भी नहीं हो पाता। प्राकृतिक शहद के बनने में भी एक निश्चित समय लगता है, खेत में अत्यधिक उर्वरक का प्रयोग करने से भूमि की स्वाभाविक उर्वरकता घटती है तथा उत्पादन की प्रकृति उर्वरक के बिना बदल जाती है, अर्थात भूमि नशीली हो जाती है।

शैक्षिक मूल्यः धीरता से सब सुधर जाता है, अधीरता से सब बिगड़ जाता है।

प्रासंगिकता

जीवन में प्रत्येक कार्य धीरे–धीरे और समय के साथ पूर्ण होता है। किसी भी कार्य को बलपूर्वक या उतावलेपन में करने से सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं होता। जिस प्रकार बूँद–बूँद गिरने से मधु (शहद) तैयार होता है और शिशु भी धीरे–धीरे बड़ा होकर तरुण (युवा) बनता है। उसी प्रकार शिक्षा, सफलता, ज्ञान और अनुभव भी समय की गति से परिपक्व होते हैं। विद्यार्थी पर दबाव डालने से वह सही तरीके से ज्ञान ग्रहण नहीं कर पाता, जबकि प्रेम से और धीरे–धीरे सीखने से वह अपने विषय क्षेत्र में विद्वान बन जाता है। अतः शिक्षक को धैर्यपूर्वक विद्यार्थी का मार्गदर्शन करना चाहिए, न कि जल्दबाजी में या दबाव डालकर। सफलता पाने के लिए धैर्य आवश्यक है। प्रकृति अपना संवर्धन समय पर ही करती है। जबरदस्ती या उतावलेपन से कार्य बिगड़ जाते हैं। अनुशासन और निरंतर प्रयास से ही उपलब्धियाँ मिलती हैं।

4.3.4 गिरे गिरे जो लोग थे, मन में राखैं खार।

हमें गिराने में गिरे, गिरे हजारों बार।।



भावार्थ

प्रस्तुत दोहे में कवि आनंद 'अभय' कहते हैं कि जो व्यक्ति मन के ओछे होते हैं, जिनका समय सदैव कटुता एवं दूसरों का अहित सोचने में ही व्यतीत होता है, ऐसे लोग भले लोगों का बुरा करने के उपक्रम में अपना सारा जीवन बिता देते हैं। ईश्वर की कृपा से भले लोगों का कुछ भी अहित नहीं होता, परंतु ओछे लोग बार–बार अपने कुप्रयासों में विफल हो जाते हैं।

शैक्षिक मूल्यः दुष्ट व्यक्ति किसी का अहित करने के प्रयास में स्वयं का ही अहित कर लेते हैं।

प्रासंगिकता

इस दोहे के माध्यम से कवि यह संदेश देता है कि जो लोग निम्न चरित्र के होते हैं, अवसाद एवं असफलताओं से भरे रहते हैं; वे दूसरों को गिराने और रोकने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे लोग नकारात्मकता एवं ईर्ष्यामें डूबे रहते हैं, इसलिए दूसरों की प्रगति सहन नहीं कर पाते; परंतु सच्चाई यह है कि वे जितनी बार दूसरों को गिराने का प्रयास करते हैं, उतनी ही बार स्वयं गिरते और अपमानित होते हैं। नकारात्मक सोच रखने वाले लोग दूसरों को नुकसान पहुँचाने के प्रयास में स्वयं की ऊर्जा और सम्मान खो बैठते हैं। यदि कोई आसमान पर थूकता है, तो थूक थूकने वाले के ही मुख पर गिरता है। इसलिए हमें ऐसे लोगों से प्रभावित न होकर अपने लक्ष्य और कर्मपथ पर स्थिर रहना चाहिए। यह दोहा हमें प्रेरणा देता है कि दूसरों की ईर्ष्या और षड्यंत्र से विचलित हुए बिना धैर्य और परिश्रम से आगे बढ़ना ही सच्ची सफलता है।

4.3.5 नदियन को तन छलत है, छलनी होत पहार।
लोभ लील निर्जन किया, तार–तार कांतार।।



भावार्थ

प्रस्तुत दोहे में कवि आनंद 'अभय' मनुष्य के अंदर व्याप्त लोभ की अनंत प्रवृत्ति के बारे में बताते हैं कि अधिक धन की कामना के वशीभूत लालची मनुष्य नदियों का अवसाद उसकी आत्मा मोरम (बालू) का निरंतर खनन करता रहता है। वह पहाड़ों को भी काट–छाँट कर समाप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य का लोभ तो देखिए, आज जंगलों के अस्तित्व को भी नष्ट–भ्रष्ट कर दिया, जिसके कारण स्वच्छ जल, शुद्ध वायु अभाव में मनुष्य का हर तरह से अमंगल हो रहा है।

शैक्षिक मूल्यः मनुष्य के लोभ ने नदी, पहाड़, प्रकृति से छेड़–छाड़ कर सब कुछ विनाशकारी स्थिति में पहुँचा दिया है।

4.4 लघुगीत माला

4.4.1 सफलता को क्या,किसी ने छाप रखा है,
जागीर बना ली है, या कोई जाप रखा है।
जो चाहेंगे वो,क्या वैसा ही होगा हमेशा,
आखिर हमारी भी मेहनत है, और
हमने भी अपनी इरादों को,नाप रखा है।।



भावार्थःप्रस्तुत कविता में कवि आनंद 'अभय' एक मेहनती, कर्मठ एवं कर्तव्य परायण व्यक्ति के उत्साह को बढ़ाते हुए कहते हैं कि सफलता पर किसी का एकाधिकार नहीं है, यह किसी की पैतृक धरोहर नहीं है और न ही सदैव जी हजूरी करने का पुरस्कार। केवल कुछ लोगों के चाहने भर से अब परिणाम उनके पक्ष में नहीं होगा, आखिर हम भी एक परिश्रमी प्रतियोगी हैं और हमारे अंदर भी लक्ष्य तक पहुंचने की दृढ़ इच्छाशक्ति है।

शैक्षिक मूल्यःसार्थक परिश्रम करने वाले को ही अंततः सफलता प्राप्त होती है।

प्रासंगिकताःवर्तमान परिदृश्य में देश में केन्द्रीय स्तर एवं विभिन्न राज्यों में होने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं में पदों की प्रोन्नति में, वेतन की वृद्धि में, लैंगिक विषमताओं, सामाजिक असमानताओं इत्यादि स्थानों पर पक्षपात के कारण होने वाली विसंगतियों पर एक कुठाराघात करने वाली कविता मेहनत करने वालों के लिए एक प्रोत्साहन तथा भ्रष्ट लोगों के लिए एक चेतावनी है।

4.4.2 मैं साधक हूँ,
बाधक नहीं हूँ।
मैं तो किनारा हूँ,
अदना सा, नदी का।
मैं किसी सुनामी का,
आराधक नहीं हूँ।।



भावार्थःकवि आनंद 'अभय' एक कर्मवीर के अंतःविचारों को कहते हैं कि एक कर्मशील व्यक्ति सदैव एक साधक की तरह होता है, प्रत्येक बात में बाधा नहीं बनता है। वह तो सदैव उस नदी के किनारे की तरह होता है जिसमें लहरों के टकराने पर भी किनारा स्थिर रहता है। वह दुष्ट शक्तियों के द्वारा प्रलोभन देने के पश्चात भी अपनी विचारधारा का परित्याग नहीं करता।

शैक्षिक मूल्यः जिसकी जैसी प्रवृत्ति, उसके वैसे कार्य।

प्रासंगिकता

वर्तमान परिदृश्य में यह कविता एक नैतिक मार्गदर्शन है। यह भीड़, अहं और अराजकता के विरुद्ध खड़े साधक व्यक्तित्व की आवश्यकता को रेखांकित करती है तथा आत्मचिंतन और विनम्रता की पराकाष्ठा को बताती है। कवि स्वयं को साधक कहता है, जो जीवन के मार्ग में सकारात्मक दिशा में अग्रसर है, और किसी भी प्रकार की अड़चन या नकारात्मकता फैलाने से स्वयं को दूर रखता है। वह स्वयं को नदी के किनारे जैसा मानता है,एक अदना, पर सहायक तत्व, जो स्वयं बहता नहीं लेकिन प्रवाह को संभालने में मदद करता है। यह प्रतीक न केवल विनम्रता दर्शाता है, बल्कि एक गहरा दार्शनिक संदेश भी देता है कि दुनिया में हर छोटा तत्व भी किसी बड़े उद्देश्य में सहभागी हो सकता है। अंततः, कवि स्पष्ट करता है कि वह विनाश की प्रतीक सुनामी का आराधक नहीं है, अर्थात् वह उग्रता, हिंसा और तबाही के विचारों से स्वयं को दूर रखता है। यह कविता आज के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है, जहां उग्रता और ध्रुवीकरण की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। यह रचना एक आह्वान है, साधना, सौम्यता और सृजन की ओर लौटने का।

कवि आनंद 'अभय' की यह कविता छोटी होते हुए भी अत्यंत प्रभावशाली है। यह आत्मविकास, साधना और विनम्रता की सीख देती है। जब दुनिया उथल–पुथल और उग्रता की राह पर जा रही हो, तब ऐसे विचार शांति और स्थिरता की मशाल की तरह होते हैं। यह कविता हमें याद दिलाती है कि हमें सुनामी नहीं बनना, बल्कि किनारे की तरह संभालने वाला, सहारा देने वाला और साधना करने वाला व्यक्तित्व बनना है।

4.4.3
पूँछ लिया किसी ने,
मौन क्यों हो?
आखिर बताना पड़ा,
आभार जताना पड़ा।
सच बोल दूँ,
किसी को बुरा लग जाएगा।
मिथ्यालाप आता नहीं,
असत्य बोल सकता नहीं।
दुर्भाव नहीं है अंधेरा,
स्वभाव में बसा है सबेरा।
जैसा हूँ वैसा ही रहने दो,
मौन हूँ, मौन ही रहने दो।।



भावार्थ

प्रस्तुत कविता में कवि आनंद 'अभय' से जब कोई सज्जन पूँछता है कि मौन क्यों हो, तो कवि उस भले मनुष्य की विनम्रता के कारण उसे बताने को विवश हो जाता है और बताता है कि सारा संसार मिथ्या प्रशंसा सुनने का अभ्यस्त हो चुका है। यदि किसी को सत्य एवं कड़वा कथन बोल दिया जाय, तो अधिकांश मनुष्यों में धैर्य एवं विवेक की कमी होने के कारण तुरंत ही पीड़ा होने लगती है, मानवीय संबंधों में दरार पड़ने लगती है। कवि को मिथ्या वार्तालाप करना भाता नहीं है, असत्य बोलना आता नहीं है। किसी के प्रति बुरा करने का कुविचार नहीं है क्योंकि स्वभाव में ही दूसरों के लिए प्रकाश है। अतः कवि कहता है,''मेरे प्रिय शुभेच्छु! मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो, मैं मौन हूँ, मुझे मौन ही धारण किए रहने दो क्योंकिमेरा संवाद किसी के लिए पीड़ा का भी विषय हो सकता है।''

शैक्षिक मूल्यः एक मौन, सैकड़ों व्यवधानों का समाधान।

प्रासंगिकता

वर्तमान परिदृश्य में यह कविता 'मौन' की सामाजिक उपेक्षा के विरुद्ध एक स्वर है जो यह बताती है कि जब प्रत्येक व्यक्ति बोलने, टिप्पणी करने और अपनी उपस्थिति जताने की होड़ में है लगा हुआ है, वहां मौन को अक्सर कमजोरी, उदासीनता या असहमति समझ लिया जाता है। इस कविता में कवि उस मौन की व्याख्या करता है जो उसकी आत्मिक शांति और विचारशीलता का प्रतीक है।मौन एक अभिव्यक्ति है; कभी–कभी मौन रहना ही सबसे सशक्त प्रतिक्रिया होती है।

सच बोल दूँ, किसी को बुरा लग जाएगा–यह पंक्ति आज के उस सामाजिक दबाव को प्रकट करती है जहां सच बोलना एक साहसिक कार्य बन चुका है, क्योंकि लोग असुविधाजनक सत्य को सुनना नहीं चाहते।सोशल मीडिया से लेकर पारिवारिक संवाद तक, लोग सजग होकर 'क्या बोलना चाहिए' सोचते हैं, क्योंकि असहमति के असहिष्णुता में बदलने का भय बना रहता है।

'मिथ्यालाप' और 'असत्य' के विरुद्ध कवि का खड़ा होना स्पष्ट करता है कि वह न तो झूठ बोल सकता है, न मिथ्या अभिनय कर सकता है। यह उस मूल्यवादी सोच का प्रतीक है जो आज के राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में लगभग लुप्तप्राय है क्योंकि जब झूठ को 'चालाकी' और 'डिप्लोमेसी' का नाम देकर प्रशंसा मिल रही हो, वहाँ यह कविता सत्यनिष्ठा की जरूरत को रेखांकित करती है। 'स्वभाव' को स्वीकार करने का आग्रह–'जैसा हूँ, वैसा ही रहने दो'–के माध्यम से कवि आत्मस्वीकृति का सशक्त संदेश देता है। आज के समाज में जहाँ दिखावा, कृत्रिमता और सामाजिक दबाव व्यक्ति को बदलने के लिए विवश करते हैं, वहाँ यह कविता स्वाभाविकता और मौलिकता की वकालत करती है। आत्म–सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। आप जैसे हैं, वैसे ही पर्याप्त हैं।

'दुर्भाव नहीं है अंधेरा, स्वभाव में बसा है सबेरा'एक दार्शनिक दृष्टिकोण बताता है कि कवि का मौन किसी नकारात्मकता या कटुता से नहीं, बल्कि अंतर की रोशनी से भरा है। यह एक ऐसा मौन है जो शांति और सद्भाव का स्रोत है, न कि कोई विद्रोह। आज के तनावपूर्ण और द्वेषपूर्ण वातावरण में यह सोच बहुत आवश्यक है; भीतर की रोशनी ही बाहर का अंधेरा मिटा सकती है।

इस कविता की प्रत्येक पंक्ति आधुनिक समाज में बढ़ती असंवेदनशीलता, असहिष्णुता और दिखावे की संस्कृति पर एक मौन लेकिन तीखा सवाल है। आनंद अभय की यह रचना हमें सिखाती है कि मौन भी एक भाषा है,सत्य बोलना साहस है, और आत्मस्वीकृति सबसे बड़ी स्वतंत्रता है। इसलिए यह कविता आज के प्रदूषित संवाद और नकली सामाजिकता के दौर में मानवीय गरिमा, सत्यनिष्ठा और आत्मसम्मान की संरक्षक बनकर खड़ी होती है।



4.4.4 राह भले मुश्किल मेरी,

पर चाह है उससे बड़ी।

क्या हुआ आज हार है,

कल जीत है निश्चित मेरी।।

भावार्थःप्रस्तुत पंक्तियों में कवि कठिन राह होने के बावजूद भी अपने उच्च विचार सदैव सकारात्मक रहने को कह रहा है, जिससे आगामी समय में जीत सुनिश्चित हो सके।

शैक्षिक मूल्यः सकारात्मक इच्छा शक्ति विजय प्राप्त करने में सदैव सहायक होती है।

प्रासंगिकताः प्रस्तुत पंक्तियों में दुर्बल, हारे हुए, कुंठित तथा असफल व्यक्तियों के मनोयोग को बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

4.4.5 हर बात सच नहीं होती,

हर बात झूठ नहीं होती।

डकैती मिलकर डालते हैं,

कहते हैं यहाँ लूट नहीं होती।।



भावार्थः प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बता रहा है कि प्रत्येक बात का दृष्टिकोण भिन्न–भिन्न होता है। समाज में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

शैक्षिक मूल्यः हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के अलग–अलग होते हैं।

प्रासंगिकताः प्रस्तुत पंक्तियों में चालाक और स्वार्थी व्यक्ति के दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है।

4.4.6 जगत सुधारन हम चले,

सुधर न पाया कोय।

निज मन में झांकन लगे,

हमसे बुरा न कोय।।



भावार्थः प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कह रहा है कि हम दूसरों को सुधारने का प्रयास करते रहते हैं, हमारे ऐसा करने से आज तक कोई भी नहीं सुधर पाया है और न ही सुधरना चाहता है। यदि वास्तविकता में हम स्वयं का निरीक्षण करें तो हम पायेंगे कि सबसे अधिक बुराइयाँ तो हमारे अंतर्मन में ही उपस्थित हैं।

शैक्षिक मूल्यः स्वयं को सुधारना दुनियाँ सुधारने से अधिक श्रेष्ठ कार्य है।

प्रासंगिकताः दूसरों के दोषों को पकड़कर संवाद विवाद करने से श्रेयकर स्वयं के दोषों का आंकलन करना ही सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है।

4.5. अप्रकाशित कविताएँ

4.5.1 बरगद का वृक्ष



झरोखे से देखता हूँ,

बार बार सोचता हूँ।

वृक्ष की थी एक डाल,

रही नहीं कहाँ गई ??



सहज ही निहारता हूँ,

अतीत को विचारता हूँ,

पूँछता हूँ बार–बार,

गई तो कहाँ गई ??



जुबान बेजुबानदार,

साथ–साथ बैठते।

ताश खेल जन मगन,

चौपरा बटोरते।।



ऊधमी गुपाल बाल,

चिल्ल पौं निपोरते।

कभी अंटियां बटोरते,

या गिल्ल दण्ड टोरते।।

बुजुर्गनाथ डार खाट,



बार बार खांसते।

तेज घाम बंद काम,

साथ–साथ बैठते।।

झूलों की बहार जब,

उमंग मनुहार तब।

रेंग रेंग झूलते या,

पेंग मचकोरते।।



एक रोज तेज धार,

गिरी घन राज से।

चर्र–चर्र धड़ाम सुन,

विटप महाराज से।।

कंपकपा गया बदन,

देखकर तरू का तन।

डाल जो विशाल थी,
आज बदहाल थी।।

काट–छाँट कर दिया,
फाड़–फांट कर दिया।
शीत में मिल तापकर,
राख–शाख कर दिया।।
टूट गई नेह शाख,
घोंसले अनेक थे।
भाग गए चरेरू सब
शेष खग कुछेक थे।।





रूठ गए तरू के भाग,
नीड़ अब बचा नहीं।
चांव–चांव नित्य राग,
पूर्व सा मचा नहीं।।
शाख जो झुकी नहीं,
अडिग सी बनी रही।
धूप रोकती रही,
आज दिख रही नहीं।।

पखेरू जो रमे कभी,
नीड़ में जमे कभी।
आज छोड़कर गए,
अंत जा बसे कहीं।।
वृक्ष था अनाथ अब,



नहीं कोई साथ अब।

लावण्यता उतर गया,

अखर गया!अखर गया।।

हो यदि कमाऊ हाँथ,

जो अभी रहा नहीं।

सोच लो भवन विहाल,

कष्ट जो सहा नहीं।।

जो अब करें हरि करें,

शाख को हरी करें।

नीड़ जो बनाए थे,

उजाड़ का श्रृंगार करें।।





बीत गए वसंत सात,

दिख रही नई प्रभात।

चमक भी निकल पड़ी,

धमक भी निकल पड़ी।।

हड़बड़ी न गड़बड़ी,

धूप भरी दुपहरी।

फरफराते डाल पात,

विटप छटा हरी भरी।।



वे लौट आए पंखधर,

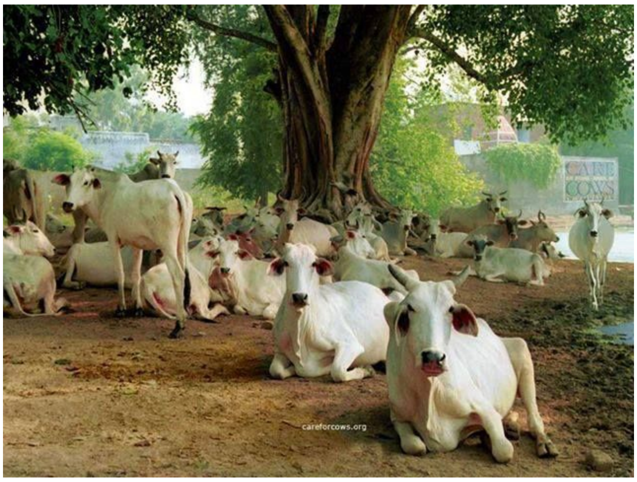
जो उड़ गए थे अंतघर।

बसा लिया पुनः भवन,

रचा लिया वही लगन।।

डाल तो रही नहीं,

नवीन शाख उग रही।



श्वान,अज, दुधारू धन,

भूमि रज में पग रही।।

व्यथा अब रही नहीं,

निर्झरा थमी नहीं।

तम निचोड़ गई निशा,

दिवस अब कमी नहीं।।

भावार्थ

कवि बुंदेलखण्ड क्षेत्र के जिला जालौन के ग्राम चिल्ली का निवासी है। प्रकृति एवं ग्राम्य जीवन से अत्यंत लगा होने की छाप प्रस्तुत कविता में दृष्टिगोचर हो रही है। कविता में बरगद के वृक्ष की एक बड़ी एवं महत्वपूर्ण शाखा बारिश के मौसम में टूटने का एवं पुनः उगने तक का मनमोहक वर्णन किया गया है।

कवि अपने भवन केझरोखे से एक बहुत ही पुराने बरगद के वृक्ष को अनायास ही देखकर सोचने लगता है कि किसी समय इस वृक्ष की एक सबसे लंबी एवं सघन डाल हुआ करती थी, आखिर वह टूट कैसे गई? गर्मी के दिनों में पशु–पक्षी और मनुष्य सभी छाया में बैठ जाया करते थे। गाँव के नौजवान, किसान दोपहर के समय काम बंद करके किसी दिन ताश खेलते, किसी दिन चौपर बिछाया जाता। नटखट बच्चे भी खूब शरारत करते, कभी कंचे खेलते, कभी गिल्ली डंडा खेलते और खूब शोरगुल करते। उन्हीं के बीच गाँव के एक बुजुर्ग व्यक्ति भी चारपाई पर लेटे–लेटे खांसते रहते थे।

कवि कहता है कि जब बारिश का मौसम आता है तो झूलों की बहार सी आ जाती थी। लंबे–लंबे पेंग चढ़ाने पर प्रशंसा मिलती थी। एक दिन तेज ध्वनि के साथ वह डाल टूट जाती है, जिससे सर्वाधिक धूप रुक जाती थी और अधिक छाया प्राप्त होती थी।वह आधे पेड़ के समान महत्व वाली थी। गर्मी के समय में गलियारे से आने–जाने वाला पथिक कुछ समय के लिए वहाँ अवश्य ही ठहर जाता था।

अब समय ऐसा आया कि टूटी डाल सर्दी के मौसम में जाड़े से बचने के उपक्रम में मिलकर जला दीं गईं। उस डाल पर रहने वाले पक्षियों के घोंसले भी टूट गए जिससे पक्षियों

ने भी अपना बसेरा अन्यत्र बना लिया। अब न तो पक्षियों का स्वर सुनाई देता है और न ही बच्चों का। अब वृक्ष की मोहकता भी कम हो गई है।

कवि ने वृक्ष की मजबूत डाल को परिवार के उस कमाऊ व्यक्ति की तरह प्रस्तुत किया है जो अब ईश्वर को प्यारा हो गया है। उस परिवार की दशा इस वट वृक्ष की पीड़ा से समझी जा सकती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वही बिखरे हुए संसार का पुनर्निर्माण करे।आगे ऐसा ही घटित होता है। सात वर्षों बाद उस डाल का खालीपन भर लिया जाता है। पुनः पक्षियों के घोंसले बनने प्रारंभ हो जाते हैं और अब गर्मी के मौसम में पशु,पक्षी, मनुष्य और राहगीर पुनः विश्राम करते दिखाई देते हैं।

प्रासंगिकता

कवि ने सामान्य कविता के माध्यम से भी बहुत ही गहरा आशय दर्शाकर बहुत ही सुंदर मानवीकरण का प्रयास किया है। एक बरगद के पेड़ को परिवार का रूप बताया है और मुख्य शाखा को परिवार का कमाऊ सदस्य। जब इस प्रमुख सदस्य का जीवन समाप्त हो जाता है, तो किस प्रकार एक हँसता—खेलता परिवार बिखर जाता है। मित्र, साथी, पड़ोसी, रोज—रोज आपसे दाना—पानी लेने वाले भी कितने स्वार्थी हो जाते हैं। इन सबमें केवल और केवल परिवार को ही कटु संघर्ष करना पड़ता है। जिस तरह से बरगद के वृक्ष को अपने रिक्त आवास को पूर्ण करने में सात वर्ष लग गए, ठीक उसी तरह एक बिखरे परिवार को संभलने में भी वर्षों लग जाते हैं, तब कहीं जाकर स्थिति सामान्य हो पाती है।

एक बुरा समय मनुष्य के जीवन को झकझोर कर रख देता है, कम आयु के बच्चों को असमय ही जिम्मेदारियों के बोझ से बड़ा बनना पड़ता है। जब तक परिवार का मुखिया संपन्न होता है एवं जीवित रहता है, सब नाते—रिश्ते अपने होते हैं, जैसे ही कुछ परिवर्तन होता है, लोगों की मानसिकता से अपने और पराए का पर्दा उठ जाता है। जीवन में सुख—दुख कभी स्थिर नहीं होता, एक आता है, दूसरा जाता है। यदि कोई सहयोग नहीं भी देता है, तो भी स्वयं को संभलने की जीवट इच्छाशक्ति, पीड़ा, तनाव, द्वंद्व, तथा विपन्नता से मुक्ति में सदैव साथ देती है।

4.5.2रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं



ऐसे ही चलता रहूगा,

रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं।

कर्म पथ परिचय स्वयं,

कौन हूँ? कहूँगा नहीं।।

पहाड़ की कगार हो,

तूफानों की रार हो।

सुनामी की बौछार हो,

भाग्य भी लाचार हो,

अन्याय को सहूँगा नहीं,

मौन अधिक रहूँगा नहीं,

ऐसे ही चलता रहूगा ,

रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं।।



विरुद्ध सब संसार हो,

निकट दिखती हार हो।

द्वंद या तकरार हो,

छुपा हुआ प्रहार हो।।

कायरों का झुंड हो,

रक्त भरा कुंड हो।

अमित्र करते वार हों,

मृत्यु का श्रृंगार हो।।



उफ भी करूँगा नहीं,

लड़ने से डरूँगा नहीं।

ऐसे ही चलता रहूँगा,

रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं।।

व्यथित हूँ, पर दृढ़ हूँ,

थकित प्रण आरूढ़ हूँ।

न हारना सीखा कभी,

न टालना सीखा कभी।।

परिवाद की न वृत्ति है,

चलना ही प्रवृत्ति है।

संवाद में स्वीकृति है,

लक्ष्य ही प्रकृति है।।

राह भले संकीर्ण हो या,

तिमिर घना विकीर्ण हो।

वनराज की हो गर्जना,

घनघोर घन का बरसना।।

अंत तक लड़ता रहूँगा,

प्रहार मैं सहता रहूँगा ।

निरंतर चलता रहूँगा,

रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं।।



भावार्थ

आनंद 'अभय' द्वारा रचित वीर रस प्रधान यह प्रेरणात्मक कविता एक चेतना–गीत है, जिसमें कर्मरत वीरों को साहस के साथ निरंतर अपने पथ पर चलने को कहा गया है तथा जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए, सारी व्याधियों का डटकर सामना करने को प्रोत्साहित किया गया है।

इस कविता कविता में कवि कह रहा है कि एक सच्चा कर्मवीर वह है जो बिना रुके,थके अपनी मस्ती में ऐसे ही चलता रहता है। उसके कर्तव्य का मार्ग ही उसका परिचय होता है, जिसे उसे किसी के सम्मुख कहने की आवश्यकता नहीं होती है। मार्ग चाहे पहाड़ों की दुर्गम कगार से होकर ही क्यों न गुजरता हो, रास्ते में तूफान, सुनामी का प्रकोप हो या भाग्य भी विपरीत ही क्यों न हो। हर परिस्थिति में मौन रहकर अन्याय को सहन नहीं करता है।चाहे सारा विश्व विरुद्ध ही क्यों न हो, किसी के साथ तुम्हारा द्वंद या वैचारिक मतभेद हो, पराजय भी निकट दिख रही हो, कायर शत्रु छिपकर प्रहार कर रहे हों, शरीर रक्त रंजित हो, मृत्यु भी बरण करने को तत्पर हो, तब भी एक विकलता भरी चीख नहीं निकलेगी, एक कर्मवीर को न तो डरा सकती है, न रोक सकती है और न ही मानसिक रूप से थका सकती है।

कवि कहता है कि एक सच्चा कर्मवीर तन से थका हो सकता है, मन से नहीं; दुखी हो सकता है, लेकिन मन से दुर्बल नहीं; कभी हार नहीं स्वीकारता और न ही कभी टालमटोली जैसे काम करता। कर्मवीर को कुतर्क करना नहीं, बल्कि कर्म करना ही भाता है, जिसकी प्रेरणा उसे गीता के महान संवादों से लक्ष्य तक आरूढ़ करने को सदैव प्रेरित करती रहती है। एक कर्मवीर के सामने लक्ष्य भले ही अंधकार के कारण स्पष्ट न दिख रहा हो, घनघोर बारिश हो रही हो, सिंह की दहाड़ भयभीत कर रही हो, इन व्यवधानों के पश्चात भी एक सच्चा कर्मवीर परिस्थितियों के प्रहारों को सहता रहता है, लड़ता रहता है, न ही कभी अपने कार्य को स्थगित करता है और न ही मानसिक रूप से थकता है, निरंतर ही आगे बढ़ता रहता है।

प्रासंगिकता

समय के प्रत्येक कालखंड में,वर्तमान में, अतीत में या फिर आगामी समय में, मनुष्य कहीं न कहीं दुर्बलता का अनुभव करने लगता है। या तो अतीत और वर्तमान के कटु अनुभव या फिर भविष्य में दोहराव न हो इसकी आशंका, मनुष्य में अपने सुनहरे भविष्य के निर्माण की छटपटाहट सदैव ही बनी रहती है। स्वयं के, समाज के एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु व्यक्ति को कर्मवीर बनना ही पड़ता है।

आज के समय में एक कर्मठ, परिश्रमी, निष्ठावान और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति अपने कार्यों से समाज को यह सिखाता है कि कर्तव्य को प्राथमिकता देना ही सच्ची सफलता की कुंजी है।सकारात्मक सोच के माध्यम से वह कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता, जिससे अनुसरण करने वालों में भी संघर्ष और साहस की भावना उत्पन्न होती है, साथ ही अपने आचरण और कार्यों से समाज को नैतिक मूल्यों की ओर ले जाता है।

एक सच्चा कर्मवीर आदर्श व्यक्तित्व के साथ—साथ राष्ट्र निर्माण में सहायक सहायक होता है। जहां एक ओर युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श व्यक्ति बनकर वह उनमें प्रेरणा, अनुशासन और मेहनत के गुण पैदा करता है, वहीं दूसरी ओर ऐसे व्यक्ति देश की प्रगति, विकास और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

एक सच्चा कर्मवीर सामाजिक बुराइयों जैसे अन्याय, भ्रष्टाचार और आलस्य जैसी सामाजिक बुराइयों से लड़कर समाज को संघर्ष की एक नई दिशा प्रदान कर आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। कर्मवीर अपने कर्तव्य को धर्म समझकर निभाता है, जिससे कर्मयोग की सच्ची भावना प्रकट होती है।

4.5.3 गौरैया

ओ री गौरैया अब,

तू क्यों नहीं गाती।

क्यों नहीं चहकती?

अब क्यों नहीं कुदकती,

अब क्यों नहीं फुदकती??

क्यों नहीं बुनती गीत,

क्यों नहीं गुनती गीत?

क्यों नहीं बनाती गीत,

क्यों नहीं गाती गीत?

क्यों नहीं सुनाती गीत,

ओ री गौरैया अब,

तू क्यों नहीं गाती गीत??



कहां चली जाती है,

क्यों लौटकर आती नहीं?

बरसों बीत जाते हैं,

दुख भी जताती नहीं,

कुछ भी बताती नहीं।।

तू क्यों सदा उदास है,

कौन सा दुख पास है?

कौन सी पीड़ा में डूबी,

क्षुधा या फिर प्यास है?

या हम पर अविश्वास है?

मानवों से आस ना,

तनिक भी विश्वास ना।

धूर्त और कपटी निशाचर,

खा गए हमें मारकर।।





मानवों से डर गई हूँ,

बदनियत पकर गई हूँ,

बोलने से घात करते,

सो मौन को मैं धर गई हूँ,

जीवितहूँ पर मर गई हूँ।

इंसानों की आदतों से,

झूठ मूठ इबादतों से,

मैं गीत को गाती नहीं,

संगीत को सुनाती नहीं।

अधिक मैं फुदकती नहीं,

और कहीं कुदकती नहीं।।

भावार्थ

प्रतिवर्ष 20 मार्च को मनाए जाने वाले गौरैया दिवस के अवसर पर आनंद 'अभय' जी के द्वारा रची गई पंक्तियां मानवीयकरण का एक सुंदर चित्रण हैं। गौरैया और मनुष्य के बीच के भावनात्मक संवाद को जीवंतता प्रदान किया गया है। प्रस्तुत कविता में गौरैया से कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं जिनके उत्तर गौरैया के द्वारा दिए जाते हैं।

कवि गौरैया से संवाद करते हुए पूँछता है,''ओ री गौरैया! अब तूने गीत गाना क्यों छोड़ दिया है?अब तू न तो चहचहाती है, न ही कूदती है और न ही फुदकती है। अब न तो तू गीतों के शब्द बुनती है, न ही गीत बनाती है। अब तू अपना मनमोहक गीत भी नहीं गाती है और न ही किसी को सुनाती दिखाई देती हो, इन सबके पीछे आखिर कौन सा कारण है कि प्रायः तुम कहीं चली जाती हो, वर्ष बीत जाते हैं फिर भी तुम लौटकर भी नहीं आती हो। तुम अपनी पीड़ा को किसी के साथ साझा भी नहीं करती हो, किसी को कुछ भी नहीं बताती हो। अरी गौरैया तू सदैव उदास क्यों रहती हो, तेरे पास ऐसा कौन सा दुख है जिसमें तू डूबी रहती हो? अरी गौरैया तू भूख या प्यास से दुःखी तो नहीं है या फिर तुझे मनुष्यों पर अब कोई भरोसा नहीं रहा जो अब किसी को कुछ भी नहीं बताती।''

गौरैया कवि को प्रत्युत्तर देती है कि अब किसी भी गौरैया को मनुष्यों से तनिक भी भरोसा या लगाव नहीं रह गया है। मनुष्यों में धूर्त,कपटी और राक्षस प्रवृत्ति के लोगों की कमी नहीं है जो सिर्फ अपने मुंह के स्वाद के लिए निरीह पक्षियों का अकारण ही शिकार कर खा जाते हैं। यही कारण है कि गौरैया के साथ साथ समस्त पक्षी मनुष्य प्रजाति से भय खाने लगे हैं। मनुष्य एक दुष्ट प्रवृत्ति का प्राणी बन गया है जो प्यार से दाना पानी देता है और धोखे से शिकार कर लेता है। यही कारण है कि अब हम सब गौरैया पक्षी मौन धारण कर लिए हैं। हम सदैव गाने में रुचि रखने वाले पक्षी विवश होकर जीवित होते हुए भी मृत प्राय हैं। हम गौरैया पक्षी मनुष्यों के स्वभाव एवं उसके विश्वासघात रूपी प्रार्थना और इबादतों को सुनकर भी गीत नहीं गाते न ही अब कोई संगीत सुनाते। हे भले मानव! तूने पूँछा तो हमने बता दिया कि हम गौरैया पक्षी गीत क्यों नहीं गाते और मनुष्यों के निकट अधिक क्यों नहीं फुदकते?

प्रासंगिकता

गौरैया पक्षी, जो कभी भारतीय घरों की दीवारों, आँगनों, खेतों और बाग–बगीचों में चहचहाया करती थी, आज हमारे आस–पास बहुत कम दिखाई देती है। इस सुंदर, मासूम और सामाजिक पक्षी का जीवन संकट में है जिसके पीछे कई गंभीर कारण छिपे हैं। सबसे प्रमुख कारण है शहरीकरण और आधुनिक जीवनशैली का तीव्र विकास, जिसमें गौरैया के लिए प्राकृतिक आवास, घोंसले बनाने की जगह और भोजन की उपलब्धता में तेजी से कमी का होना है। पहले के घरों में छोटे–छोटे छेद, कच्ची दीवारें, छज्जे और खुले आँगन होते थे जहाँ गौरैया अपना घोंसला बना सकती थी, परंतु अब कंक्रीट के आधुनिक और बंद मकानों में ऐसी जगहें ही नहीं रहीं। साथ ही मोबाइल टावरों से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगें भी गौरैया के जीवन के लिए घातक सिद्ध हो रही हैं क्योंकि ये उसकी दिशा–निर्धारण क्षमता और

प्रजनन पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। इसके अलावा, खेतों में बढ़ते कीटनाशकों और रासायनिक खादों के उपयोग के कारण कीट–पतंगों की संख्या में भारी गिरावट आई है, जो गौरैया का मुख्य आहार है। भोजन की कमी के कारण गौरैया अब उन जगहों से पलायन कर रही है जहाँ कभी उसकी भरमार थी। साथ ही, वायु, ध्वनि और प्रकाश प्रदूषण ने भी उसके जीवन को असुरक्षित बना दिया है। गौरैया के न दिखने से केवल एक प्रजाति का संकट नहीं खड़ा होता, बल्कि यह पर्यावरणीय असंतुलन की चेतावनी भी है, क्योंकि गौरैया जैसे पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र की संतुलित श्रृंखला का आवश्यक हिस्सा हैं। यह स्थिति हमें यह सोचने पर विवश करती है कि हम अपने छोटे–छोटे स्वार्थों के लिए किस हद तक प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर रहे हैं। हालांकि कुछ जागरूक नागरिक, संस्थाएं और सरकारें गौरैया को बचाने के प्रयास में लगी हैं।कृत्रिम घोंसले बनाना, जागरूकता फैलाना, और वृक्षारोपण जैसे उपाय अपनाए जा रहे हैं, फिर भी यह प्रयास पर्याप्त नहीं हैं जब तक जनमानस स्वयं इस दिशा में सजग और सक्रिय न हो। यदि हम चाहते हैं कि भविष्य की पीढ़ियाँ भी इस मासूम पक्षी की चहचहाहट से आनंदित हो सकें, तो हमें अपने पर्यावरण, वास्तुशिल्प और जीवनशैली में ऐसे बदलाव लाने होंगे जिससे गौरैया को फिर से घर, भोजन और सुरक्षा मिल सके। गौरैया का विलुप्त होना केवल एक पक्षी का खो जाना नहीं है, बल्कि यह हमारी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत का नुकसान है, जिसे समय रहते नहीं रोका गया तो आने वाले समय में हमें कई और प्रजातियों को भी खोना पड़ सकता है।

4.5.4 किसान

कहने को किसान है,

देश की शान है।

गरीबी के खोल में,

छिपा इंसान है।।

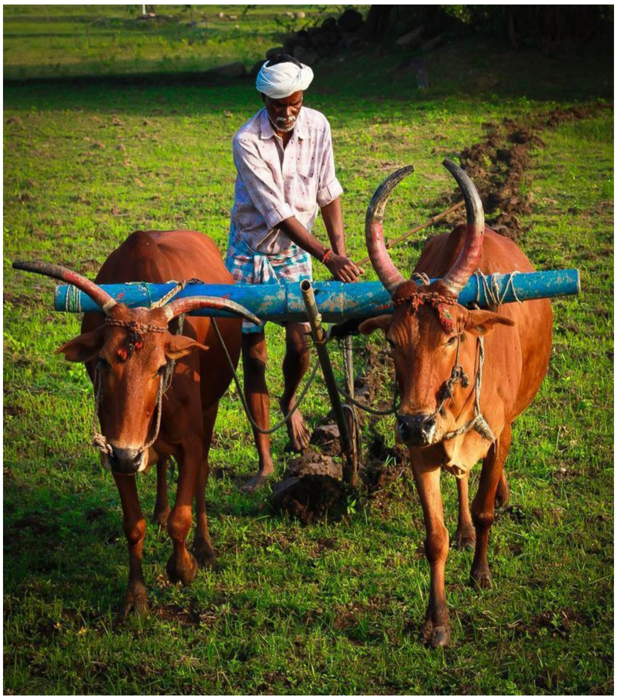
हमारा अन्नदाता है,

भोजन उगाता है।

विपन्नता की मार खा,

रोज रोज मरता है।।

कमाता भी फसल है,





गंवाता भी फसल है।

फसल ही आधार है,

फसल के बिना अब,

सब कुछ उधार है।।

मुसीबत ने शोर किया,

हलधर कमज़ोर किया।

कर्ज का प्रहार किया,

हर दिवस हर वार किया।

बेच दिया हल जिसे,

अब लाएगा कहाँ से?

आफत बड़ी है,

सुलझाएगा कहाँ से?

पेट की ज्वलंत आग,

बुझाएगा कहाँ से?

बीमार सहचरी की,

दवा लाएगा कहाँ से??

न खाने को बचता,

न खर्चने को बचता।

पांच किलो राशन की,

बहुत बड़ी आस है।

आज का किसान,

बड़ा ही उदास है।।

बिटिया के विवाह को,

समाज के निवाह को।





साहूकारों से हाँथ जोड़,

बैंको से जोर तोड़,

कुछ कर्ज जो लिया कभी,

सुरसा सा मुख फाड़,

ब्याज बढ़ गया वही।।

धरती का पूत आज,

पीड़ा अकूत आज।

ढूंढता दिहाड़ी है,

पुरानी उधारी है।।

किसानी के काम में,

अपने ही खेत में।

मजबूर बन गया है,

मजदूर बन गया है।।

खेत बेचा मन मार,

न टूटा कभी मानी हार,

वह टूट गया कर्ज से,

परिवार के फर्ज से,

गरीबी के मर्ज से,

कपाल पर निशान हैं,

रूठाकिसान देखो,



आज परेशान है।।



मौसम की मार से,

चट्टान सा अडिग रहा।

तंगी के हाल में,

दुर्दिन जंजाल में,

हँसता रहा गाता रहा।।

कड़कड़ाती सर्दी में,

कंपकंपाते हाड़ मांस,

बरसते घने कोहरे में,

पंछी, पशु और मानुस,

दिखता न कोई आस पास।।

पूस का कड़क वार,

लोगों को डराता है।

उसी सर्द रात में,

खेत में खड़ा हुआ,

किसान मुस्कुराता है।

खेत को निहारता है,

सपने उकेरता है।

इस बार कर्ज से,

मुक्ति को विचारता है।।

प्रातः भी हुई नहीं,

रात भी गई नहीं।

हाय! क्या हुआ यहाँ,

विधाता क्यों रुका नहीं?





तुहिन–खण्ड काल बन,
भरभरा कर गिरे।
आस आसमान से,
बंधी वही बिखर गई।।
आज का नहीं है साब,
सालों से यही हाल है।
किसानी के काम में,
किसान कंगाल है।।

भावार्थ

ग्रामीण अंचल के परिवेश को दर्शाती हुई कृषक जीवन को शब्दों में उकेरती हुई कवि आनंद 'अभय' की इस कविता ने एक सामान्य किसान की मूल समस्याओं को दर्शाया गया है। प्रस्तुत कविता में कवि कहता है कि लोग किसान को देश की शान कहते हैं जबकि स्थिति इसके ठीक उलट है। किसान गरीबी से पीड़ित एक ऐसा व्यक्ति है जो भोजन उगाता है, अन्नदाता कहलाता है फिर भी स्वयं बहुत दुखी रहता है। किसान मौसम के प्रभाव से अच्छी फसल कमा लेता है और गवां भी देता है। जब फसल नहीं रहती तो फिर उधार की जिंदगी प्रारंभ हो जाती है। उधार के जीवन से किसान कर्ज की चपेट में बुरी तरह से आ जाता है, जिस कारण उसे अपने हल और बैलों को बेचना पड़ता है। मुसीबतों से घिरा किसान अबभोजन की, दवा की व्यवस्था कहाँ से करेगा? आज किसान बड़ा ही निराश है उसे तो अब सिर्फ 5 किलो राशन से ही उम्मीद है।

किसान की दुख भरी कथा है। अपनी बिटिया के विवाह के लिए, समाज की रीति निभाने के लिए साहूकारों से हाँथ जोड़कर और बैंकों से जुगाड़ करके जो कर्ज लिया था अब उस मूलधन का ब्याज सुरसा की तरह बढ़ता जा रहा है।विवश और परेशान होकर मजबूर किसान आज अपने ही खेत में दिहाड़ी मजदूर बन गया है। विवश होकर उसे अपना प्रिय खेत बेचना पड़ता है। वह किसान जिसने कभी हार नहीं मानी, परिवार के पालन–पोषण, गरीबी और कर्ज के कारण टूट गया, पीड़ित हो गया।

कष्ट भरे मौसमों में भी किसान चट्टान की तरह अडिग बना रहा, गरीबी के समय में भी हंसता गाता रहा। कड़कड़ाती सर्दी में, कोहरे के प्रभाव में जब पशु, पक्षी और अन्य मनुष्य

दृष्टिगत नहीं होते हैं, तब उसी पूस की ठंडी रात में किसान खेत में अकेला खड़ा रहता है, मुस्कुराता है, अपनी फसल को नई आशा की दृष्टि से देखता है और कर्जमुक्ति के सुंदर स्वप्नों में डूब जाता है।तभी एक बज्रघात करने वाली एक घटना घट जाती है। अभी सबेरा भी नहीं हुआ होता है। हे परमात्मा तूने ऐसा क्यों कर दिया। सारे खेत में ओलों की तेज बारिश हो जाती है और सारा खेत किसान की बुनी हुई आशाओं का एक बार पुनः शमशान बन जाता है। हर साल का यही हाल रहता है। कर्जदार किसान सदैव के लिए कंगाल बना रहता है।

प्रासंगिकता

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की अधिकतर जनसंख्या आज भी खेती पर निर्भर है, परंतु विडंबना यह है कि जो किसान दिन–रात मेहनत कर अन्न उपजाता है, उसे स्वयं भूखा सोने को विवश होना पड़ता है। किसान की स्थिति समाज में अत्यंत दयनीय है, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान जिनकी आजीविका केवल खेतों पर निर्भर करती है। प्राकृ तिक आपदाएँ जैसे सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि और असमय वर्षा, फसल की बर्बादी का प्रमुख कारण बनती हैं, जिससे किसान के परिश्रम पर पानी फिर जाता है। फसल बर्बाद होने पर उसे न तो उचित मुआवजा मिलता है और न ही बीमा योजनाएँ पूरी तरह से राहत दे पाती हैं। खेती के लिए आवश्यक संसाधनोंः बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई, ट्रैक्टर आदि, की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं, जबकि उपज का मूल्य वही पुराना रह जाता है या मंडी में औने–पौने दामों में बिकता है। इस असंतुलन के कारण किसान को बैंकों या महाजनों से कर्ज लेना पड़ता है। सरकारी ऋण प्रक्रिया जटिल और विलंबित होती है, जिससे किसान साहूकारों के पास ऊँचे ब्याज दर पर कर्ज लेने को मजबूर हो जाते हैं। एक बार यह चक्र शुरू हो जाता है, तो किसान कर्ज के दलदल में फँसता ही चला जाता है। समय पर कर्ज चुकता न कर पाने के कारण उसे अपनी जमीन, मवेशी या आभूषण तक बेचने पड़ते हैं। कई बार तो उसका आत्मबल टूट जाता है, और वह आत्महत्या जैसे कदम उठा लेता है। मीडिया में आए दिन किसानों की आत्महत्याओं की खबरें यह दर्शाती हैं कि कृषि क्षेत्र किस तरह संकट में है। सरकारें कर्जमाफी की घोषणाएँ तो करती हैं, परंतु जमीनी स्तर पर उन योजनाओं का प्रभाव सीमित रहता है। नीतिगत असमानताएँ, न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की गारंटी का अभाव, और बाजार की अनिश्चितता किसान की स्थिति को और बदतर बना देती हैं। किसान को सम्मान, सुरक्षा और स्थायित्व की आवश्यकता है, न कि केवल चुनावी वादों की। जब तक खेती को एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में नहीं देखा जाएगा और किसानों को आर्थिक, सामाजिक तथा तकनीकी रूप से सशक्त नहीं किया जाएगा, तब तक यह विवशता और कर्ज का दुष्चक्र चलता ही रहेगा। कृषि सुधार, बेहतर सिंचाई व्यवस्था, वैज्ञानिक तरीकों का प्रचार–प्रसार, और किसान केंद्रित नीतियाँ ही उनके भविष्य को बेहतर बना सकती हैं। गाँवों में

कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना, युवाओं को कृषि में नवाचार के लिए प्रेरित करना, और पारंपरिक खेती के साथ–साथ आधुनिक तकनीकों का समावेश ही इस स्थिति में वास्तविक बदलाव ला सकता है। किसान की कर्जदारी केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक त्रासदी भी है। जब खेतों में मेहनत करने वाला किसान अपने परिवार को दो वक्त की रोटी देने में असमर्थ हो जाता है, तो उसकी पीड़ा केवल आँकड़ों में नहीं, आँखों में छलकते आँसुओं में दिखती है। अतः यह समय की पुकार है कि हम किसान की विवशता को केवल संवेदना से नहीं, बल्कि ठोस और दीर्घकालिक योजनाओं से समझें और सुलझाएँ, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके और पुनः 'अन्नदाता' की भूमिका में गौरव के साथ खड़ा हो सके।

4.5.5 जनपद जालौन के नदी संगम

नाचत 'सिंध' चली इठलाती,
आगे मिली 'कुंवारी' है।
झाँसी से पैदल चल आई,
प्यारी 'पहूज' हमारी है।।
आई आई 'चंबल' आई,
'यमुना' में मिल जाती है।
शरमा करके 'सिंध' चल रही,
यही हमारी थाती है।।





दक्षिण–पश्चिम प्रिय ललितपुर,
वयम् 'बेतवा' आती है।
झाँसी और जालौन घूमकर,
पहुँच हमीरपुर जाती है।।
कहटा–कमटा निकट विकट बन,
'धसान' धमककर आती है।
इतनी सारी न्यारी नदियां,
सीमा 'अभय' बनाती हैं।।
जालौन जिला को भाती हैं।
जालौन जिला को भाती हैं,

जालौन जिला को भाती हैं।।

भावार्थ

आनंद 'अभय' जी के द्वारा बुंदेलखंड के एक जिला–जालौन (उत्तर प्रदेश) के चारों ओर नदियों के तीन भिन्न–भिन्न स्थानों पर अलग–अलग संगम हैं, जिनमें पहला संगम जालौन,भिंड,इटावा जिलों की उभयनिष्ठ सीमा पर पाँच नदियों का संगम, पचनदा (जगम्मनपुर) है। पचनदा संगम पर सिंध, पहूज, क्वांरी,चंबल और यमुना का ऐतिहासिक संगम है।

दूसरा संगम हमीरपुर के पास बेतवा तथा यमुना नदियों का संगम है। यह संगम हमीरपुर, जालौन तथा कानपुर देहात जिलों की उभयनिष्ठ सीमा पर बनता है।

तीसरा संगम जालौन जनपद की दक्षिण पूर्व सीमा पर हमीरपुर–झांसी–जालौन सीमा पर बेतवा तथा धसान नदियों का उत्कृष्ट संगम कहटा तथा कमटा नामक स्थानों के निकट है।

प्रासंगिकता

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए आनंद 'अभय' जी ने प्रस्तुत कविता में मनुष्य के मनुष्य की प्रकृति के सानिध्य में रहने की शिक्षा प्रदान की जिससे मनुष्य के आपस में हो रहे द्वेष के कारण प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना मनुष्य की प्रकृति बन गई है।

नदियाँ सदैव ही जीवनदायिनी रही हैं। प्रकृति का अभिन्न अंग हैं नदियाँ। नदियाँ अपने साथ बारिश का जल एकत्रित उसे भू–भाग में पहुंचती हैं। एशिया में गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, आमूर, लीना, कावेरी, नर्मदा, सिंधु, यांगत्सी प्रमुख नदियाँ हैं। यह विडंबना ही है कि हमारी आस्था पवित्र और संस्कृति से जुड़ी नदियां प्रदूषित हो रही हैं। लोगों द्वारा काफी समय से सीवर, औद्योगिक कचरा, पॉलीथिन आदि नदियों में डाला जा रहा हैं, जिससे आज भारत की नदियाँ दुनियाँ मे सबसे ज्यादा प्रदूषित हो गई हैं। दिल्ली में यमुना, कानपुर में गंगा एवं मुम्बई में मीठी नदी अत्यंत प्रदूषित हैं। इन नदियों का पानी ही नहीं वरन् आसपास की भूमि भी बंजर बनती जा रही है। इससे देश की अर्थव्यवस्था एवं नागरिकों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। एक तरफ नदियों को माता कह कर पूजा जाता है, दूसरी ओर उनमें सीवर, कचरा और शव डाले जाते हैं। ऐसे में नदी को पूजने और पवित्र कहने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हम नदियों को प्रदूषित करने का कारक बनते हैं तो कर्मकांडों से हमे खुशी नहीं मिलने वाली। इससे स्पष्ट है कि भारत में प्राचीन काल से ही नदियों का अत्यधिक महत्व रहा है और आज भी बहुत हद तक हमारा जीवन नदियों पर निर्भर है। इनके प्रति सम्मान का भाव बनाए रखना

इसलिए जरूरी है ताकि हम इनकी स्वच्छता और पवित्रता को चिरकाल तक बनाए रख सकें। इनका जल हमारे लिए उपयोगी हो सकेगा और हम लंबे समय तक इनका लाभ उठा सकेंगे। हमें वास्तव में नदियों का सम्मान करना सीखना होगा। इसके लिए हमें स्वयं संकल्पबद्ध होना होगा और स्वयं से किया गया यह संकल्प हर हाल में निभाना होगा। यही उनकी सच्ची पूजा होगी। अन्यथा आने वाले समय में बाढ़, सूखा, जल संकट, भूमि प्रदूषण ही नहीं बल्कि उत्तराखंड जैसी भयावह प्राकृतिक आपदाएं भी देखनी पड़ेंगी।



4.5.6बंद हो रहे विद्यालय

शिक्षा का आलय था,
हमारा विद्यालय था,
पिताजी, चाचाजी, ताऊजी,
हमारे दादाजी और गांव के
सभी काकाजी और भैयाजी,
बुआजी और बहन जी।
न जाने कितने लोग पढ़े,
अशिक्षा से खूब,
अंग्रेज समझकर लड़े।।
कितना खुश होकर,
हम पढ़ने जाते थे।

सहपाठियों से लड़ आते थे,
गुरुओं की मार का,लताड़ का,
कभी बुरा नहीं मानते थे।
मित्रों से झगड़े बिना हम
रहते नहीं थे।
उनकी बातें किए बिना हम
कभी सोते नहीं थे।।
साथ में खेलना, खाना, घूमना,
यादों को विचारकर,
आज बड़ा खलता है।
क्या दिन थे स्कूल के!

समय रूकता नहीं बदलता है।

वही विद्यालय आज देखो,

निर्जन बनकर रो रहा है।

अपनी गौरव गाथा को,

अपनों से कुछ कह रहा।

ताले पड़े हैं बड़े–बड़े,

सन्नाटा पसरा है,

मुख्य द्वार बिलख रहा,

देख देख मन अखरा है।

मां बाप कह रहे हैं,

बच्चे छोटे हैं अभी,

दूर जाने में खतरा है।।

समायोजन हुआ है दूर

ऊबड़–खाबड़ डांग है

जानवर जहाँ–तहाँ

लगा रहे छलांग हैं।।

जिम्मेदार जनों से

यही हमारा निवेदन है

शिक्षा अनिवार्य है तो

क्यों नहीं संवेदन है??

अब कैसे घर–घर दीप जलेगा?

कैसे कोई मुन्नी और मुन्ना पढ़ेगा?

क्या अभी भी आशा शेष है?

या फिर गाँव के बच्चों का,

नौनिहालों का,

वंचित और बदहालों का,

भविष्य ही अवशेष है?



भावार्थ

प्रस्तुत कविता में कवि आनंद 'अभय' ने उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों में कम संख्या होने के कारण उनका समायोजन होना और न्यूनतम छात्र संख्या वाले विद्यालयों को बंद किया जाना कविता का विषय है।

कवि बंद हो रहे विद्यालयों में पढ़ने वाले पूर्व विद्यार्थियों की भावनाओं का वर्णन करते हुए कहता है कि हमारा विद्यालय शिक्षा का एक ऐसा भावनात्मक भवन रहा है, जहाँ पर हमारे, दादाजी, ताऊजी, चाचाजी, बुआजी, भैया, दीदी और स्वयं कवि के अलावा न जाने कितने लोगों ने अपनी प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। कवि कहता है कि अपनी उस बाल्यावस्था में हम सब बच्चे प्रसन्न होकर विद्यालय जाते थे, सहपाठियों के साथ खूब खेलते थे, लड़ते थे, गुरुओं की मार और डांट खाते थे, फिर भी कभी बुरा नहीं मानते थे। जिन मित्रों से झगड़ा करते थे, उनके बिना रहते भी नहीं थे। उनके साथ खेलना, खाना, छुट्टी के बाद घूमना–फिरना आज भी बहुत याद आता है। चिंता रहित बाल्यावस्था के वे कितने अच्छे दिन थे!आज सभी जिम्मेदारियों में भाग–दौड़ किए जा रहे हैं। समय रुकता नहीं, परिवर्तित

होता है। आज जब पुनः उसी विद्यालय को निर्जन देखते हैं तो कष्ट होता है।आज उसी विद्यालय में सन्नाटा पसरा है, मुख्य द्वार पर बड़े बड़े ताले लटके हुए हैं। विद्यालय का समायोजन कर दिया गया है, बच्चों को अब दूसरे गाँव पढ़ने जाना होगा। बच्चों के माता पिता का कहना है, बच्चे अभी छोटे हैं। जहाँसमायोजन हुआ है रास्ते में ऊबड़—खाबड़ जंगल है। जंगली जानवरों का खतरा है। कवि जिम्मेदार राजनेताओं और उच्च पदों पर पदस्थ लोगों से निवेदन करते हुए अपनी बात कहता है कि यदि शिक्षा अनिवार्य है तो इसमें संवेदनशीलता क्यों नहीं है? कैसे घर—घर ज्ञान का दीप जलेगा, कैसे कोई मुन्नी या मुन्ना अपनी पढ़ाई पूरी करेगा? क्या अभी भी कोई आशा शेष है या कहीं अभावग्रस्त संसाधानरहित बच्चों का भविष्य आगे असुरक्षित तो नहीं है?

प्रासंगिकता

उत्तर प्रदेश, जो देश का सबसे बड़ा राज्य है, वहाँ की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से कई समस्याओं से जूझ रही है। हाल ही के दिनों में यह देखा गया है कि राज्य के विभिन्न जिलों में बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालय बंद हो रहे हैं या उनमें पढ़ाई न के बराबर हो रही है। यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है, बल्कि सामाजिक विकास, बाल अधिकार और समान शिक्षा के लक्ष्य को भी प्रभावित करता है।

प्राथमिक विद्यालयों के बंद होने के पीछे कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण है छात्रों की घटती संख्या। आजकल गाँवों और कस्बों में भी लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने लगे हैं, भले ही उनकी आर्थिक स्थिति सीमित हो। सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की अनुपस्थिति, खराब पढ़ाई, अधूरी सुविधाएँ, और गैर—शैक्षणिक गतिविधियों में शिक्षकों की व्यस्तता के कारण अभिभावकों का विश्वास टूट गया है। इसके विपरीत, निजी स्कूलों में यूनिफॉर्म, समयबद्धता, अंग्रेजी माध्यम और अनुशासन के कारण लोग उन्हें बेहतर मानते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है शहरीकरण और पलायन। बहुत से ग्रामीण परिवार काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं, जिससे गाँवों में बच्चों की संख्या कम हो जाती है और विद्यालय लगभग खाली हो जाते हैं। प्रशासनिक स्तर पर इस स्थिति से निपटने के लिए कई बार दो या अधिक विद्यालयों को आपस में मिलाकर एक किया जाता है, जिससे दूर—दराज के बच्चों के लिए स्कूल पहुँचना कठिन हो जाता है और वे पढ़ाई छोड़ देते हैं।

सरकारी उपेक्षा और संसाधनों की कमी भी इस संकट को बढ़ा रही है। अनेक विद्यालयों में न तो शौचालय हैं, न पीने का पानी, न खेल की सामग्री, और न ही बैठने की समुचित व्यवस्था। कई

विद्यालयों में तो भवन भी जर्जर हो चुके हैं। शिक्षकों की भारी कमी, समय पर नियुक्ति न होना और प्रशिक्षण की कमी भी प्राथमिक शिक्षा को कमजोर करती है।

इस संकट का सबसे बुरा असर गरीब, दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्गों पर पड़ रहा है, क्योंकि उनके पास निजी शिक्षा का विकल्प नहीं होता। यदि प्राथमिक विद्यालय बंद होते गए तो समाज में शिक्षा की असमानता और बढ़ेगी और लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित हो सकते हैं। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि सरकार प्राथमिक विद्यालयों को पुनर्जीवित करने के लिए ठोस कदम उठाए। शिक्षकों की नियमित भर्ती, विद्यालयों की मरम्मत, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार, बच्चों को रुचिकर शिक्षा देने के लिए नवाचार, और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है। साथ ही, प्राथमिक शिक्षा को केवल योजना के रूप में नहीं, राष्ट्रीय विकास के आधार के रूप में देखा जाना चाहिए। जब तक हर बच्चे को निःशुल्क, गुणवत्तापूर्ण और समान अवसर वाली शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक शिक्षित भारत और विकसित भारत का सपना अधूरा ही रहेगा।

4.5.7नवयुग के राही

नवयुग के राही सावधान,
कर्मयुग के राही सावधान।
आगे बढ़ो मिल सब जवान,
आज सबका इम्तिहान।।
धरनी को मिल हिला दो,
दिखा दो एक क्रांति।
नष्ट कर दो नष्ट कर दो,
जीर्ण शीर्ण भ्रांति।।
आंधियों तूफान में,





जंजीर डाल लो।

व्यवधान सामने मिले,

सीने पे थाम लो।।

पग न तेरा डिगडिगे,

सिंह की गर्जन भले।

हौसला न क्षीण हो,

अमित्र भले दर्जन मिलें।।

पाषाण की बरसात हो,

लावे का वेग तीव्र हो।

सूर्य सन्निकट रहे,

चिर रैन आज शीघ्र हो।

भावार्थ

आनंद ‘अभय’ द्वारा रचित वीररस की इस प्रेरणात्मक कविता में कवि वर्तमान समय के कर्मवीरों को नवयुग के और कर्मयुग के राही कहकर संबोधित करते हुए कहता है कि हे नवयुवको! कर्मपथ पर निरंतर सहयोगात्मक दृष्टिकोण के साथ अग्रसर रहो। आज आपकी परीक्षा का समय आ गया है, जिसका सामना सबको मिलकर ही करना है। हे कर्मवीरो! तुम सबके पुरुषार्थ की क्रांति में वह क्षमता है जिससे कि पृथ्वी पर नवीन ऊर्जा का संचरण दिखने लग जाता है। आप सबमें पृथ्वी पर परिवर्तन करने की दृढ़ इच्छादृशक्ति है। अतः पुरानी भ्रांतियों एवं कुप्रथाओं को नष्ट करने की पहल करो। मार्ग में अवरोध के रूप में भले ही आंधी, तूफान, यहाँ तक कि शेर का भयभीत करने वाला स्वर ही क्यों न सुनाई दे, कठिनाइयाँ आने पर भी अपने कर्तव्य पथ से कभी विचलित मत होना, न ही कभी अपने हौंसले को टूटने देना। मार्ग में विपरीत एवं दुर्गम परिस्थितियों की संख्या कितनी भी क्यों न हों। हे कर्मवीरो! सारा जग शत्रु ही क्यों न बन जाए, पत्थरों की बारिश हो रही हो, लावा गतिमान नदी के रूप में बह रहा हो या सूर्य अधिक तपिश वाला बनकर कितना ही दुखदाई मौसम क्यों न बना दे या आज ही प्रलय की स्थिति क्यों न उत्पन्न हो जाए। हे कर्मठ मानव! अपने कदमों को रोकना नहीं, अपने प्रयासों पर विराम मत लगाना। जब तक प्रयासों की पूर्ति न हो जाए, कभी रुकना नहीं। निरंतर अपने लक्ष्य की ओर गतिमान बने रहना।

प्रासंगिकता

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए कवि आनंद 'अभय' जी द्वारा प्रस्तुत कविता में राष्ट्रोन्नति का स्वर प्रदान किया गया है। नौजवानों के अंदर सोई हुई उनकी कर्मठता को झकझोर कर कर्म पथ पर अग्रसर करने, व्यवधानों का चुनौती समझकर सामना करने, विपरीत परिस्थितियों का पूरे धैर्य एवं सूझ–बूझ के साथ सामना करने को दर्शाया गया है। कवि, राष्ट्र की राजनीति के उन पंडितों एवं धुरंधरों का भी आवाह्न करना चाह रहा है कि वे लोग भी अपना योगदान देश के विकास में सार्थकता, सकारात्मकता, सहयोग एवं समर्पण के साथ उत्तम पक्ष–विपक्ष की भूमिका का निर्वहन करें। स्वार्थपरता से लेकर स्वराष्ट्र प्रथम, वोट बैंक की राजनीति से लेकर जनहित नीति तथा संबोधन से लेकर उत्तम संबंध बनाने का संबोधन किया है। समता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व का भाव केवल कथनी में ही न हो, बल्कि व्यवहारिकता में भी सार्थक प्रयास दिखना चाहिए।

राष्ट्र सदैव महान वीरों एवं महापुरुषों की भूमि रहा है, जिन्होंने सदैव अपने प्राणों से भी अधिक राष्ट्र को महत्व दिया है। घास की रोटियां खाने वाले महाराणा प्रताप, मुगलों को छकाने वाले वीर शिवाजी महाराज, अंग्रेजों की नाक में दम करने वाले आदरणीय विरसा मुंडा, विदेशों में भारतीय ज्ञान का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद जी, स्वतंत्रता के आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति देने वाले असंख्य ज्ञात तथा अज्ञात वीरों का योगदान सदैव ही अविस्मरणीय रहेगा।

4.5.8 मंजिल के राही

उद्योगों को समझो अपने,
प्रयत्नों को कर डालो।
रुको नहीं मंजिल के राही,
कर डालो कुछ कर डालो।।
असमंजस में उलझो मत अब,
कंटक जाल तोड़ डालो।
डरो नहीं किंचित भी राही,
कर डालो कुछ कर डालो।।





बीत गया मत सोचो उसको,
भय को हरा फेंक डालो।
कभी नहीं कर सके जिसे तुम,
विजय दिवस बना डालो।
रुको नहीं मंजिल के राही,

कर डालो कुछ कर डालो।।



जीवन है एक कोरा कागज,
जैसा चाहो रच डालो।
स्वयं विधाता बनकर प्यारे,
भ्रम के पंथ तोड़ डालो।।
रुको नहीं मंजिल के राही,
कर डालो कुछ कर डालो।।
मित्र बंधु प्रियजन के संग में,
मन के भेद मिटा डालो।
विनम्रता जीवन का गहना,
कर्कश शब्द तोड़ डालो।।
रुको नहीं मंजिल के राही,
कर डालो कुछ कर डालो।।
श्रेष्ठ, ज्येष्ठऔर गुरुजन सबके,
कुछ तो गुन अपना डालो।
रुको नहीं मंजिल के राही,
कर डालो कुछ कर डालो।।.



भावार्थ

प्रस्तुत कविता कवि आनंद 'अभय' के द्वारा रचित एक प्रेरक गीत है। इसमें कवि के द्वारा अपने कार्यक्षेत्र को अपनी रुचि के साथ निर्धारित कर आनंद एवं उत्साह के साथ अपने कार्य को करने के लिए कहा गया है। इस प्रकार की निरंतरता, सफलता के निकट अवश्य ही पहुँचाएगी। कवि कार्यों की प्राथमिकता को समझाते हुए अपने प्रयासों के माध्यम से व्यवधानों से पार पाते हुए, बिना किसी भय के अपने कर्तव्यों को करने के लिए कह रहा है। कवि कहता है जो समय बुरा था, अब बीत गया है। उसके बारे में सोचने से अब कोई लाभ नहीं है। अतः अपनी दुर्बलताओं को दूर करते हुए, स्वयं को सशक्त इच्छाशक्ति का बनाते हुए, अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर उसे प्राप्त कर लो। कवि कहता है मनुष्य का जीवन एक कोरे कागज के समान होता है अतः आप परिश्रम करके स्वयं के भाग्य के विधाता

बनकर मन वंचित सफलता प्राप्त करो तथा सामान्य लोगों द्वारा गढ़े गए भ्रांति भरे कथनों को असत्य सिद्ध कर दो। कवि नवयुवकों से कहता है कि अपने मित्र, भाई, परिजनों के साथ अपने मन के द्वेषों को समाप्त कर दो क्योंकि विनम्रता ही सदैव मनुष्यता का सच्चा एवं अच्छा आभूषण होता है इसलिए कर्कश शब्दों का चयन करना बंद कर दो। हे मंजिल के राही! रुको मत!कुछ न कुछ सार्थक कार्य अवश्य ही करते रहो।

जो भले लोग हैं, आयु में आपसे बड़े हैं, और आपके शिक्षक रहे हैं, उनके सभी नहीं तो कम से कम कुछ अच्छे गुण ही अपना लो, ऐसा करने से ही आपका भला हो जाएगा। अतः हे कर्मठ मनुष्यों!कर्म के प्रति सचेत एवं जागरूक रहो।

प्रासंगिकता

यह कविता लक्ष्य, सिद्धि हेतु प्रेरणा देते हुए हमें यह बताती है कि जीवन में लक्ष्य पाकर रुकना नहीं चाहिए, बल्कि निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। यह संदेश आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बेहद आवश्यक है। वर्तमान समय में कई लोग असफलता के डर और निर्णय की दुविधा में उलझ जाते हैं। कविता स्पष्ट कहती है कि भय और भ्रम को त्यागकर आगे बढ़ना ही सफलता की कुंजी है। बीते समय पर पछताने की बजाय वर्तमान को सार्थक बनाने का भाव इसमें है, जो आज के व्यस्तता भरे जीवन में समय प्रबंधन की महत्ता को दर्शाता है।

जीवन एक कोरा कागज है, इस प्रकार की सृजनात्मक सोच हमें यह सोचने को प्रेरित करती है कि अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार गढ़ा जा सकता है, बशर्ते हम सक्रिय और रचनात्मक रहें। प्रस्तुत कविता केवल व्यक्तिगत सफलता की बात नहीं करती, बल्कि मित्रता, अपनापन, विनम्रता और कटुता से बचने का भी संदेश देती है, जो सामाजिक समरसता के लिए आवश्यक है। गुरुजनों और वरिष्ठों से सीख लेना यह बताता है कि हमें अपने जीवन में अनुभवी और श्रेष्ठ जनों के गुणों को अपनाकर शांति और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

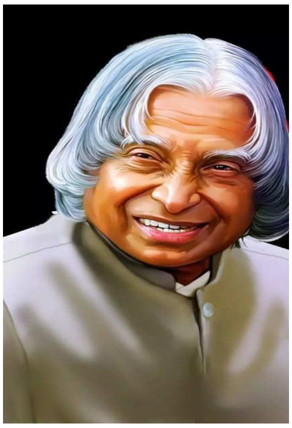
संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यह कविता आज के व्यक्ति को प्रेरणा, साहस, आत्मविश्वास और मानव मूल्यों से जोड़ती है। यह न केवल व्यक्तिगत प्रगति, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्थान का मार्ग भी दिखाती है।



4.5.9 हुंकार

कलम हमारी ताकत है,

हमें कलम इबादत करना है।
हमें अपने डर से लड़ना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है।।



प्रयासों के उस अंबर तक,
हमें सीढ़ी आज बनाना है।
नित नूतन–नूतन करना है,
हमें बूँद–बूँद घट भरना है।
हमें जीत सुनिश्चित करना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है ।।

तलवारों की झंकारों से,
हुंकारों और तकरारों से।
गुरबत के कटु प्रहारों से,
नहीं रुकना है, नहीं रुकना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है।।





हमें आगे आगे बढ़ना है,
हमें सबको लेकर चलना है।
हमें रुकना है न थकना है,
हरपल प्रतिपल चलना है,
हमें 'अभय' दीप सा जलना है।
हमें जीत सुनिश्चित करना है,
हमें जीत सुनिश्चित करना है।।

भावार्थ

प्रस्तुत कविता कवि आनंद 'अभय' के द्वारा रचित एक प्रेरक कविता है। इस कविता में कवि नौजवानों में लक्ष्य के प्रति समर्पण के भाव को प्रोत्साहित करता है। कवि कहता है कि शिक्षा प्राप्त करना हमारी मूल शक्ति है इसलिए हमें शिक्षा के लिए ही साधना करना है। इसके लिए हमें अपनी व्याधियों एवं परेशानियों रूपी भय से लड़कर अपनी विजय को पूरी तरह से सुनिश्चित कर लेना है। हमें प्रयासों से उस अंतिम पायदान तक सफलता की सीढ़ी बनाना है। नित्य नवाचारों में नवीनता के माध्यम से थोड़ा–थोड़ा करके हमें सफलता प्राप्त करना है। कवि मार्ग में आने वाले अवरोधों का वर्णन करते हुए कहता है कि जिस तरह से कोई योद्धा तलवारों के स्वरों से, आयुधों की गर्जना से, बड़बोले शब्दों से तथा कठिन परिस्थितियों में भी कभी घबराता नहीं है, ठीक उसी तरह हमें भी एक योद्धा की तरह तब तक नहीं रुकना है, जब तक कि हमें विजय प्राप्त न हो जाए। कवि कहता है कि हमें एक श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता की तरह सबको साथ लेकर आगे बढ़ना है। न तो हमें रुकना है, और न ही थकना है, हमें अपने पास प्राप्त समय का सम्मान करते हुए एक दीपक की तरह अभय होकर जलना है और ऐसा तब तक करना है जब तक कि हम सफलता को प्राप्त न कर लें।

प्रासंगिकता

प्रस्तुत कविता में कलम को 'ताकत' और 'इबादत' के रूप में दर्शाया गया है, जो आज के ज्ञान–आधारित युग में शिक्षा, विचार और रचनात्मकता के महत्व को उजागर करता है। भय से संघर्ष और आत्मविश्वास के लिए यह कविता बताती है कि जीवन में डर को हराना और आत्मविश्वास से भरकर आगे बढ़ना ही विजय की पहली शर्त है। "बूँद–बूँद घट भरना" पंक्ति यह सिखाती है कि छोटे–छोटे प्रयासों से भी बड़ी सफलता पाई जा सकती है, बशर्ते धैर्य और लगन बनी रहे। तलवारों की झंकार, हुंकार और गरीबी के प्रहार जैसे प्रतीक कठिन परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कविता बताती है कि इनसे घबराकर रुकना नहीं, बल्कि अडिग रहकर आगे बढ़ना है। कविता में सामूहिक प्रगति का भाव समाज में सहयोग, एकजुटता और सामूहिक विकास की आवश्यकता को दर्शाती है, जो आज के समय में बहुत ही आवश्यक है। आशा और प्रेरणा का दीपक बताता है कि जीवन में साहस, दृढ़ता और सकारात्मकता को अपनाने का प्रतीक है। यह कविता हमें यह सिखाती है कि ज्ञान को हथियार बनाकर, साहस को साथी बनाकर और सबको साथ लेकर सतत प्रयास करना ही सफलता और समाज के उत्थान का मार्ग है।

4.6 बाल कविताएँ

4.6.1 बरखा रानी



बरखा रानी, बरखा रानी,

पानी को बरसाओ ना।

रिमझिम रिमझिम नाच करो,

और अधिक तरसाओ ना।

खेत हमारे सूखे प्यासे,

कागद नाव चलाओ ना।
गुड्डा, गुड़िया और खिलौने,
चाहो तो ले जाओ ना।।



गर्मी आती उमस रुलाती,
आओ तरस दिखाओ ना।
बिन पानी के नहीं किसानी,
बरस बरस अब जाओ ना।।
बरखा रानी जाओ ना,
पानी मत बरसाओ ना।
खेत भरा आंगन है भीगा,
अपने घर को जाओ ना।

शैक्षिक मूल्यः कृषि और सुखद जीवन के लिए वर्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है।

प्रासंगिकताः बच्चों, नौजवानों और किसानों को वारिश को मौसम खूब भाता है। आवश्यकता के लिए वारिश का मौसम ठीक है परन्तु अति वृष्टि कभी भी लाभप्रद नहीं रहती है।

4.6.2 चिड़िया रानी



चींचीं करती चिड़ियारानी,
मेरे घर में आती है।
दाना खाती पानी पीती,
सबके मन को भाती है।।



कभी बैठती गगन अटारी,
कभी निकट आ जाती है।
कभी हाँथ से भोजन लेकर,
फुर्र–फुर्र उड़ जाती है।।

नन्हीं सी है चोंच सहारा,
तिनका–तिनका लाती है।
बड़े प्यार से चिड़िया रानी,

अपना नीड़ बनाती है।।

कभी चोंच से नोच नोचकर,

भात चपाती खाती है।

कभी—कभी इठलाती है तो,

दूर बहुत उड़ जाती है।।



शैक्षिक मूल्यः जलवायु परिवर्तन के बावजूद भी पक्षियों का कलरव सुखद अनुभव है।

प्रासंगिकताः कवि के घर में प्रातः काल से चिड़ियों का जमावड़ा लगा रहता है। दाना—पानी की व्यवस्था होने के कारण चिडियाँ भी चीं—चीं करके अपनी प्रसन्नता दर्शाती हैं। चिडियों के साथ विभिन्न पक्षी भी आते—जाते रहते हैं।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

5.3शैक्षिक उपादेयता

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध ''आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता" के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं–

5.1.1 आनंद 'अभय' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना

आनंद 'अभय' का बचपन आर्थिक संघर्ष में बीता, फिर भी इन्होंने अपनी मेहनत और लगन से अंग्रेजी विषय से परास्नातक, बी.एड. तथा एम.एड. तक की शिक्षा पूर्ण की। हमें भी आनंद 'अभय' के जीवन से सीख लेते हुए अपने लक्ष्य को अपना ध्येय बनाते हुए सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

आनंद 'अभय' ने अपनी अध्यापन यात्रा जिला जालौन, उत्तर प्रदेश के उरई, जालौन, एट शहर एवं कस्बों के विभिन्न निजी विद्यालयों एवं कोचिंग संस्थाओं से प्रारंभ की। वर्तमान में भी अस्थाई अध्यापन इन्हीं विद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों में निरंतर है।

काव्य रचना की शुरुआत के बारे में आनंद 'अभय' बताते हैं कि बाल्यावस्था में विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लिया करते थे और राष्ट्रीय गीत एवं कविता सुनाया करते थे। अब प्रश्न यह आया कि कविता वह सुनाएंगे जो किसी ने न सुनाई हो। 10 वर्ष की बाल्यावस्था में जागृत हुआ यह भाव कक्षा 9 में काव्य रचना के रूप में तब सार्थक हुआ जब गुरुजनों का प्रोत्साहन, आशीर्वाद एवं मित्रों की प्रशंसा प्राप्त हुई। हमें भी आनंद 'अभय' की भांति विकासोन्मुखी सोच के साथ कार्य करना चाहिए।

आनंद 'अभय' जी ने अपने जीवन काल में आगरा, दिल्ली, जबलपुर, भोपाल, राजस्थान–भ्रमण, रांची, ओडिशा में भुवनेश्वर एवं जगन्नाथपुरी इत्यादि देश के विभिन्न स्थलों एवं राज्यों में विद्यालयों से आयोजित एवं व्यक्तिगत भ्रमण–यात्राएँ की हैं। कवि आनंद 'अभय' की भ्रमण प्रकृति हमें यह सीख देती है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले, भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है। अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम् के दर्शन हमें सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान मिलते हैं। इसके लिए विद्यालयों द्वारा प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों को दूर–दराज भ्रमण हेतु अवश्य ही ले जाना चाहिए।

आनंद 'अभय' जी ने स्वच्छंद विषय को लेकर हिंदी कविताओं की एक श्रृंखला लिखी हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने की राह में है। इनके द्वारा रचित 'एकलव्य का न्याय' नामक खंडकाव्य शीघ्र ही प्रकाशित होने की ओर अग्रसर है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की विपुल सेवा की है तथा उनकी लेखनी अभी भी अनवरत काव्य साधना में समर्पित है।

आनंद 'अभय' जी सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य एवं संवेदनशील कवि हैं। उनका हृदय कुटिलता से दूर सहजता में रमता है तथा हिन्दी को तकनीकी से जोड़ने के लिए समर्पित है। उनके इसी स्वभाव का परिचय उनकी रचनाओं में मिलता है।हमें भी अपना जीवन सरल, आडंबर रहित, राष्ट्रप्रेम से भरा हुआ उच्च नैतिक मापदंडों वाला बनाना चाहिए।

5.1.2 आनंद 'अभय' जी की चयनित कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन

आनंद 'अभय' की रचनाओं में विविधता का समावेश है। नदी, जंगल,झरना,पहाड़, पठार वनस्पति, पशु–पक्षी तथा प्रकृति के मनोरम परिवर्तनों के अलावा सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विविधता भरे विचारों को वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप सांचे

में गढ़ना आनंद 'अभय' केकाव्य रचनाओं की प्रमुख विशेषता है। आनंद 'अभय' जी की चयनित कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन को अग्रलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है–

- आनंद 'अभय' अपनी कविता 'जनपद जालौन के नदी संगम' के अंतर्गत जिला जालौन की प्रमुख जीवनदायिनी नदियों सिंध, पहूज, क्वांरी, यमुना, चंबल, वेतवा तथा धसान का बड़ी गहराई से वर्णन करते हैं और उनके सानिध्य में प्रसन्नता एवं शांति का अनुभव करते हैं।

- 'बरगद का वृक्ष' नामक कविता दर्शाती है कि वृक्ष के पतझड़ होने या उसकी शाखाओं के टूट जाने से पशु, पक्षियों एवं मनुष्यों का उसके पास आना–जाना बंद कर देना यह दर्शाता है कि विपत्ति के समय ही भले और बुरे व्यक्तित्व की पहचान होती है। हमें स्वार्थी लोगों से सदैव सावधान रहना चाहिए जो सुख में ही आपके मित्र बने रहना चाहते हैं।

- 'रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं' नामक कविता कठिन परिस्थितियों में भी व्यक्ति को सकारात्मक एवं दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्तित्व बनाकर प्रेरणा प्रदान करने का काम करती है। इस कविता को माध्यमिक स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

- 'किसान' नामक कविता में भारतीय किसान के अन्नदाता बनने की यात्रा एवं संघर्ष के विविध मार्मिक रंगों को दर्शाया गया है, जिसमें किसान एक योद्धा के रूप में निखरकर सामने आता है। हमें भी किसान की तरह अपने अध्ययन में लक्ष्य बनाकर सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और संघर्ष से नहीं घबराना चाहिए।

- 'गौरैया' नामक कविता में कवि ने गौरैया पक्षियों की कम होती संख्या एवं उनके द्वारा गीत न गुनगुनाए जाने को आधार बनाकर प्रकृति के संतुलन पर ध्यान केंद्रित किया है। गौरैया नामक कविता को प्राथमिक स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

- 'बंद हो रहे विद्यालय'नामक कविता में कवि के द्वारा वर्तमान शिक्षा नीति के कारण बंद हो रहे प्राथमिक विद्यालय, दुर्गम स्थानों पर समायोजन तथा बच्चों के घर से विद्यालय के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का वर्णन है।

- 'हुंकार' कविता में कवि आनंद 'अभय' कलम को शक्ति का स्रोत तथा भय को दुर्बलता के प्रतीक बताते हैं। उच्च मनोयोग से कोई भी बाधा पार की जा सकती है तथा किसी भी कठिन से कठिन लक्ष्य को साधित किया जा सकता है।

- 'नवयुग के राही सावधान' नामक प्रेरणादायी कविता में कवि के द्वारा व्यथा एवं व्यवधान से संघर्ष करते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान की गई है।

- 'मंजिल के राही' नामक कविता में कर्म के प्रति एकाग्रता, निरंतरता एवं नैतिक मूल्यों को दर्शाया गया है। प्रस्तुत कविता को माध्यमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जा सकता है।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्षों की सार्थकता उसके शैक्षिक उपादेयता पर निर्भर है। शैक्षिक निहितार्थ न होने पर शोध कार्य की कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं होती है, जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती, बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है।प्रस्तुत लघु–शोध प्रबन्ध के शैक्षिक निहितार्थ अग्रलिखित हैं–

- जिस प्रकार आनंद 'अभय' ने ग्रामीण परिवेश में अपना जीवन व्यतीत करते हुए ग्रामीण जीवन को अनुभूत किया, उसी प्रकार हमें भी अपने परिवेश को गहराई से समझकर अपने जीवन में आत्मसात कर उसे अपने भावी जीवन में उपयोग कर सार्थक बनाना चाहिए।

➤जिस प्रकार आनंद 'अभय' जी अपने समकालीन प्रतिष्ठित कवियों से परिचय व मित्रता होने से उनके काव्य सृजन में निखार आया, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में अच्छे मित्र बनाना चाहिए।

➤ जिस प्रकार कवि आनंद 'अभय' ने काव्य लेखन के साथ–साथ अध्यापन को आजीविका का साधन बनाया, उसी प्रकार हमें भी जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में ऊँचाई पर पहुँचने हेतु एक विकल्प बनाए रखना चाहिए ताकि भविष्य में उसे आपदा के समय जीवन यापन के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके और हमारा स्वप्निल लक्ष्य प्रभावित न हो सके।

➤ जिस प्रकार आनंद 'अभय' जी प्रत्येक परिस्थिति में सौहार्द के साथ काम करना पसंद करते हैं, उसी प्रकार हमें भी धैर्य और शांति के साथ कर्तव्यपथ पर जुटे रहना चाहिए और प्रत्येक परिस्थिति से सामंजस्य बनाकर निरंतर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते रहना चाहिए।

➤जिस प्रकार आनंद 'अभय' जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में अपना विशिष्ट योगदान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

➤ पश्चिमी चकाचौंध, मोबाइल, इण्टरनेट तथा कम्प्यूटर की दुनिया ने व्यक्ति को प्रकृति से कोसों दूर कर दिया है, जिसके कारण वह अवसाद, चिंता एवं नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो गया है। अतः हमें अधिकाधिक प्रकृति के सानिध्य में रहने का प्रयत्न करना चाहिए। घर, परिवार, तथा विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों को नदियों, वनों, पहाड़ों, झरनों इत्यादि के सानिध्य में अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी इनके महत्व को हृदयांगम कर सकें। 'जनपद जालौन के नदी संगम' नामक कविता को उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जाना चाहिए।

➤ आज जंगल सिमटते जा रहे हैं, नदियाँ खोखली होती जा रही हैं, पहाड़ों को छीला जा रहा है और विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल खड़े होते जा रहे हैं, जो पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। पेड़–पौधों, नदियों तथा पहाड़ों से ही हमारा अस्तित्व है। विद्यार्थियों को बचपन से ही इनका महत्व बताया जाना चाहिए। 'यह कैसा विकास' नामक कविता को माध्यमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जाना चाहिए।

➤ हमें भी कर्मवीरों की भांति हर परिस्थिति में संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य–प्राप्ति की ओर अग्रसर रहना चाहिए। नवयुग के राही नामक कविता को माध्यमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जाना चाहिए।

➤हमें एकलव्य के समान बुलंद इरादों के साथ जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।

➤ हमें भी जीवन के संघर्षों में उतार–चढ़ाव में हमेशा कर्तव्य एवं सत्य के पथ पर डटे रहना चाहिए। जिसका मार्ग सही होता है, वह दूसरों की परवाह किए बिना दृढ़ता के साथ निरंतर आगे बढ़ता रहता है। अंत में उसे विजयश्री अवश्य प्राप्त होती है और समाज उसकी जय–जयकार करता है। "रुकूँगा नहीं, थकूँगा नहीं" नामक कविता को उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में स्थान दिया जाना चाहिए।

➤ हमें भी कवि की भावना के अनुरूप परोपकारी, साफ–स्वच्छ नियति वाला, निःस्वार्थी, निष्कलंक, सच्चरित्र जैसे गुणों से युक्त इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए, इसी में देश और समाज का कल्याण निहित है।

➤ युवा वर्ग जिस प्रकार के गीत–संगीत सुनते हैं, उनके विचार उसी प्रकार के होते हैं। अतः युवाओं को राष्ट्रप्रेम, जीवन उपयोगी, सांस्कृतिक गीतों को सुनना चाहिए, जिससे उनके अंदर देशभक्ति की भावना जागृत हो सके।

➤ विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों को किसान की भांति कर्मयोगी, थकान रहित परिश्रम करते हुए अध्ययन के दौरान आने वाली विभिन्न कठिनाइयों को अपने जीवन का अंग मानते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।

➤अपने काम के साथ–साथ कुछ समय के लिए हमें प्रकृति का भी आनंद लेना चाहिए क्योंकि प्रकृति ही वह शक्ति है जो हमें इस विश्व में सब कुछ प्रदान करती है।

➤ आनंद 'अभय' जी का जीवन एक प्रेरणा का मापदण्ड है जो हमें बताता है कि लक्ष्य सदैव छोटा बनाएँ, उसे प्राप्त करें, इसके बाद ही उसमें संवर्धन करें। जीवन में कितने भी अभाव, उतार–चढ़ाव रहे हों, फिर भी लगन, परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प से उच्चस्तरीय लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सकता है।

➤ आनंद 'अभय' जी की सेवायोजन यात्रा से हमें यह सीख मिलती है कि अध्ययन यात्रा पूर्ण होने पर किसी भी सेवायोजन से, भले ही वह कितना ही छोटा एवं अस्थाई प्रकृति का ही क्यों न हो, जुड़ जाना चाहिए तथा उसमें रहते हुए निरंतर उन्नति के लिए प्रयास करते रहना चाहिए; उम्मीदों का दरवाजा अवश्य ही खुलता है।

➤ व्यक्ति को जीवन में कर्मवीर बनकर रहना चाहिए। लगनशील व्यक्ति अंत में अपना लक्ष्य प्राप्त कर ही लेता है। हमें भी आनंद 'अभय' जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर किसी क्षेत्र विशेष में निरंतर अपना योगदान करते रहना चाहिए।

➤ हमें भी आनंद 'अभय' जी की भाँति पर्यावरण तथा समाज के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक होना चाहिए, तभी सही अर्थों में राष्ट्र का विकास संभव हो सकता है। वर्तमान में नदियों का, पहाड़ों का अत्यधिक खनन, जंगलों की कटाई, वृक्षारोपण में लापरवाही जैसे विषयों पर जन–जागृति की व्यापक आवश्यकता है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी की पाठ्य–पुस्तकों में आनंद 'अभय' जी की काव्य रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों में चिंतन क्षमता का विकास होगा।

➤ इस भागदौड़ भरे जीवन मेंतनाव का होना स्वाभाविक है, अतएव आनंद 'अभय' की दिनचर्या की भाँति योग को अपनी जीवनशैली का हिस्सा अवश्य ही बनाना चाहिए।

➤ उत्तम काव्य लेखन आज की व्यापक समस्या है। वर्तमान में नई पीढ़ी फिल्मी गीतों को ही कविता समझ बैठी है, उनके आदर्श फिल्मी अभिनेता एवं अभिनेत्रियाँ बन बैठे हैं, जो धूम्रपान, सुरापान, मादक पदार्थों का सेवन एवं अश्लीलता का प्रचार–प्रसार करते रहते हैं, जिसका कुप्रभाव समाज पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इन सबके समाधान हेतु राष्ट्रप्रेम एवं नैतिकता भरे काव्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

➤ प्रायः ऐसा देखने को मिलता है कि हिन्दी भाषा का शिक्षक पद्य का सस्वर वाचन न करके उसे गद्य की तरह पढ़ता है जिससे बच्चों में रूचि जागृत नहीं हो पाती, अतएव शिक्षकों को सस्वर वाचन कराना चाहिए।

5.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध में शैक्षिक उपादेयता अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध का शीर्षक "आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता" है, जिसके अंतर्गत कवि

आनंद 'अभय' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है। शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन सफल कर सकेंगे।

कवि आनंद 'अभय' ने अपने जीवन में बहुत सी उत्तम कृतियों की सर्जना की है। हमें भी इनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रुचि के अनुसार जीवन में ऐसे पर्याप्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए जिससे यह जगत हमें भी सदा याद रखें।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कवि आनंद 'अभय' की मूल्यपरक रचनाओं का भावार्थ एवं प्रासंगिकता सहित विवेचन किया गया है,जिन्हें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थी बुंदेलखण्ड के प्रसिद्ध कवि की लेखनी से परिचित हो सकें तथा उनके काम की अभिव्यक्त संवेदना को आत्मसात कर सकें।

कवि आनंद 'अभय' ने भारतीय जीवन के उन सभी पक्षों को अभिव्यक्ति दी है, जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं। सुख–दुःख, कमरतोड़ परिश्रमयुक्त जीवन, आकांक्षाओं में दम तोड़ते सपने, क्रूर व्यवस्था के पाखण्ड, प्रजातंत्र के खोखले खेल और इन सबसे अलग प्रकृति के समग्र उपादानों पर न्योछावर कवि की अनुभूति की वह अप्रतिम मानवीय संसक्ति, जो जीवन को नई चेतना से अनुप्राणित कर देती है।

उनकी कविताओं में हवा, धूप, नदी, बादल, पेड़–पौधे, पत्थर, पहाड़, अमीरी, गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, राजनीति, शोषणइत्यादि सामाजिक विषयों को हम नई तरह से देखते हैं। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से वस्तुओं, जीवों और मनुष्य की निजता, जीवट और विजय संघर्ष की गाथा रची है। प्रगतिशील कवि होने के नाते, उन्होंने प्रकृति के माध्यम से भी अन्याय, शोषण और अत्याचार का विरोध किया है। वे किसानों, श्रमिकों, वंचितों, छात्रों के प्रतिनिधि हैं। श्रम की समग्रता, समानता, उपलब्धता ही उनकी मुख्य काव्य वस्तु है। शिक्षक, विद्यार्थी एवं जनसामान्य कवि आनंद 'अभय' के काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति की संवेदना एवं आम आदमी के दुःख–दर्द को महसूस कर सकेंगे एवं उससे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे।

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गए लघु शोध प्रबन्ध,''आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता'' के अंतर्गत कवि आनंद 'अभय' के काव्य संग्रह से चयनित कविताओं, दोहों, बाल–कविताओं तथाखण्डकाव्य के भावार्थ एवं शैक्षिक प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझावों के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत करता है। ये आगामी शोध हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं–

- भावी शोध में आनंद 'अभय' जी की अन्य रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि आनंद 'अभय' के साथ अन्य कवियों के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि आनंद 'अभय' जी की रचना पर आधारित है। भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्ता, सुंता (2021)। छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा के काव्य सृष्टि के प्रतिमान। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा(म.प्र.)। http://hdl-handle-net/10603/467598

यादव, रणजीत (2015)। पद्माकर के काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन।पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। http://hdl-handle-net/10603/377583

सिंह,संदीप कुमार (2022)। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त की काव्य रचना के विविध आयाम। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्व विद्यालयकोटवा–जमुनीपुर–दुबावलपुर, प्रयागराज (उ.प्र.)।http://hdl-handle-net/10603/470206

वाघ, किशोर अशोक (2022)। जय प्रकाश कर्दम के कथा साहित्य एवं काव्य की भाषाः एकअनुशीलन। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद। http://hdl-handle-net/10603/419987

चावला, अंजु (2008)। लक्ष्मी नारायणलाल के नाटकों में मानवीय मूल्य।पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर। http://hdl-handle-net/10603/336201

यादव, अजय कुमार(2017)।हिंदी में निर्गुण भक्तिकाव्य का इतिहासलेखनस्वरूप और संकलन।पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। http://hdl-handle-net/10603/340929

कुमार, सुशील(2001)। रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्यः कथ्य एवं शिल्पगत अध्ययन। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। http://hdl-handle-net/10603/109516

राय, प्रवीन कुमार (2002)। ''तुलसी के काव्य में लोक संस्कृति'। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, महात्मा गांधी काशी विद्या पीठ, वाराणसी।http://hdl-handle-net/10603/315165

शेख कबीर, शेख साबेर (2020)। भारत रत्न अटलबिहारी बाजपेई जी के काव्य में विविध स्वर। पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, अंकुशराव टोपे महाविद्यालय, जालना, महाराष्ट्र। http://hdl-handle-net/10603/345165

रावल, विपुलकुमार एच (2010)। हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्यःएक अध्ययन।

पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर, गुजरात।

http://hdl-handle-net/10603/103481

किशोरी,जनक(1996)। आचार्य हजारी प्रसाद के उपन्यासों में मानव मूल्य।पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी,उ.प्र.।

http://hdl-handle-net/10603/12204

तिवारी, विकास (2024)। डॉ शशि भूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान। लघुशोध प्रबन्ध, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा),उ.प्र.।

https://archive.org/details/dr.-shashibhushan-mishr-ka-sahityik-evam-shaikshik-yogdan

अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध

सिंह, अजीत कुमार (2022)। केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन। लघुशोध प्रबंध, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा),उ.प्र.।

परिशिष्ट

(अ) आनंद 'अभय' भ्रमण चित्रावली

(ब) जीवन वृत्त

परिशिष्ट–अ

आनंद 'अभय' भ्रमण चित्रावली



परिशिष्ट–ब

जीवन वृत्त



<u>व्यक्तिगत सूचना</u>

नाम : आनन्द कुमार प्रजापति

माता का नाम : श्रीमती रामादेवी

पिता का नाम : श्री रामकिशोर प्रजापति

जन्म तिथि : 7 जुलाई 1986

पता : ग्राम व पोस्ट चिल्ली, तहसील उरई, जिला–जालौन (उ.प्र.)

पिनकोड : 285001

मोबाइल नंबर : 8009683746

ई–मेल : prajapati.anandkumar15@gmail.com

<u>शैक्षणिक योग्यताएँ</u>

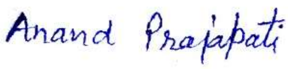
क्र0सं0	परीक्षा का नाम	बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष	प्राप्तांक	श्रेणी	प्रतिशत
1	हाईस्कूल	यू0पी0 बोर्ड, इलाहाबाद	2001	350	द्वितीय	58.33
2	इण्टरमीडिएट	यू0पी0 बोर्ड, इलाहाबाद	2003	268	द्वितीय	53.60
3	स्नातक	बुन्देलखण्ड वि0वि0,झाँसी	2006	569	द्वितीय	56.90
4	परास्नातक (अंग्रेजी)	बुन्देलखण्ड वि0वि0,झाँसी	2008	419	द्वितीय	52.37
5	पी0जी0डी0सी0ए0	जीवाजी वि0वि0, ग्वालियर	2007	1129	प्रथम	66.41
6	शिक्षा स्नातक	बुन्देलखण्ड वि0वि0,झाँसी	2022	892	प्रथम	74.33

<u>घोषणा:</u>मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त सभी जानकारी मेरे संज्ञानानुसार सर्वोत्तम रूप से सत्य है।

दिनांक: 08.09.2025

हस्ताक्षर

स्थान: अतर्रा (बाँदा)



(आनन्द प्रजापति)

आनंद 'अभय' के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता

भगा दे डर, कुछ अलग कर! कुछ अलग कर! कुछ अलग कर!

डगर मुश्किल दूर मंजिल,

नज़रों से ओझिल है साहिल।

लड़खड़ा और गिर संभलकर,

बढ़ना है आगे को राहिल ।।

मुश्किलों के पथ बहुत हैं,

हिम्मतों के रथ पर चढ़कर।

दृढ़ता से कर पकड़कर,

जोश को सीने में रखकर ।।

ताल ठोक दुनियाँ से कहकर,

चलते चलना तू संभलकर।

भगा दे डर, कुछ अलग कर! कुछ अलग कर! कुछ अलग कर!!

---आनंद 'अभय'



 मूल्य-99₹

ISBN: 978-93-5679-270-8